Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

बद्धे विसयपासेहिं,
मोहमावज्जइ पुणो मंदे।

जो विषय-पाश में आबद्ध होता है, वह मंद मनुष्य फिर मोह में फँस जाता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 9 • 5 - 11 दिसंबर, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 03-12-2022 • पेज : 20 • ₹ 10

निश्छल भक्ति से हो सकती है अभय और शक्ति की जागरणा : आचार्यश्री महाश्रमण

मेड़ता सिटी, २६ नवंबर, २०२२

मीरां की नगरी मेड़ता सिटी। मीरांरूपी श्रावक समाज के घनश्याम आचार्यश्री महाश्रमण जी ६ किलोमीटर का विहार कर मेड़ता सिटी पधारे। परम पावन ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे भीतर अनेक प्रकार की वृत्तियाँ होती हैं। गुस्से-आक्रोश की वृत्ति हो सकती है, तो क्षमा की वृत्ति भी हो सकती है। अहंकार या निरहंकारिता, छल-कपट या ऋजुता भी हो सकती है। लोभ की चेतना है, तो संतोष का साक्षात्कार भी किया जा सकता है। भय की मनोवृत्ति होती है, तो अभय का साम्राज्य भी देखने को मिल सकता है।

भय एक वृत्ति है, जो दुर्बलता से युक्त होती है। स्वयं डरने वाला दूसरों को डराने की चेष्टा भी कर सकता है। हमारे जीवन में अभय की चेतना का विकास हो। न डरें न दूसरों को डराएँ। सब जीवों को अभय दान दें। सर्वश्रेष्ठ अभयदान अहिंसा से होता है। अभय की अनुप्रेक्षा भी एक प्रयोग है। आदमी भक्ति के द्वारा भी संभवतः अभय को प्राप्त कर सकता है।

आज मेड़ता सिटी आए हैं, जो मीरांबाई और भक्ति से जुड़ा हुआ क्षेत्र है। भक्ति व्यक्तिपरक, सिद्धांतपरक और आदर्शपरक भी हो सकती है। किसी सद्गुण या त्याग-संयम के प्रति भक्ति हो सकती है। नमस्कार महामंत्र भक्ति का एक महामंत्र है। पाँच प्रकार की आत्माओं के प्रति इस मंत्र में प्रयोग किया गया है।

भक्ति एक अहंकार के नाश का प्रयोग बन सकती है। आराध्य के प्रति भक्ति है, तो अहंकार कैसा। गुरु के प्रति भक्ति हो। भक्ति से अभय और शक्ति की जागरणा हो सकती है। भक्ति गहरी हो। जहाँ समर्पण है, वहाँ कोई शर्त नहीं। अपने सिद्धांतों और आदर्शों के प्रति भक्ति हो।

भक्तामर श्वेतांबर और दिगंबर दोनों परंपराओं में मान्य है। यह भी एक भक्ति स्रोत है और भी अनेक मंत्र-स्तोत्र भक्ति के हैं। लोगस्स, खमासमणो नमोत्थुणं जैसे अनेक स्तोत्र हैं। भक्ति के साथ आदमी के आचरण भी अच्छे होने चाहिए। भक्ति में तादात्म्य स्थापित हो जाए। यह एक प्रसंग से समझाया कि भक्ति में निःशर्तता और निश्छलता हो तो पवित्र भक्ति से शक्ति जागरण हो सकती है। आत्मा का कल्याण कर सकते हैं।

पूज्यप्रवर की भक्ति अभिवंदना में सभा मंत्री धर्मेन्द्र बोथरा, महिला मंडल व कन्या मंडल, स्थानकवासी समाज से पुखराज मेहता, जैन श्राविका मंडल, रमेश तातेड़ (मूर्तिपूजक समाज), नगरपालिका चेयरमैन गौतमचंद टाक, दिनेश सिंघवी, मयंक भंडारी, आशा बोथरा, मुख्य अतिथि के०सी० बोकड़िया, बालिका मंडल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। छोटे बच्चों ने कविताएँ गाकर भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में सदैव करें आध्यात्मिक सेवा का प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

बस्सी, २६ नवंबर, २०२२

जनोपकार के एकमात्र उद्देश्य के साथ आचार्यश्री महाश्रमण जी १५ किलोमीटर का विहार कर बस्सी गाँव स्थित राजकीय विद्यालय पधारे। मुख्य प्रवचन में जन-जन के देवता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी सृष्टि का व्यवस्था क्रम है। दिन-रात। ये क्रम हमारे इस क्षेत्र में चल रहा है। ये प्रकृति का उपहार है कि हमें २४ घंटे फ्री में रोज मिलते हैं। जैसे बादल बरसता है। सूर्य तपता है। हमारी सृष्टि को एक दृष्टि से देखें तो कितनी अच्छी है, कितनी उपकारक है।

हमें प्रकृति से और भी मिलता है। श्वास के लिए हवा मिलती है। प्रकृति में धर्मास्तिकाय नाम का तत्त्व है। इसके द्वारा हमें गति में सहायता मिलती है। अमूर्त, अरूपी है फिर भी कितनी सहायता करता है। नाम की भावना न हो। अगर धर्मास्तिकाय सहयोग करना बंद कर दे तो सारी सृष्टि रुक जाएगी, ये मात्र एक कल्पना है, ऐसा होने वाला नहीं है। वह तो उदासीन भाव से सहयोग करता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

✦ *स्वार्थ से सर्वार्थ की दिशा में प्रस्थान व प्रगति करने वाला व्यक्ति महान् बनता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मोक्ष प्राप्ति तक जारी रहता है पुनर्जन्म का क्रम : आचार्यश्री महाश्रमण

धनेरिया, २७ नवंबर, २०२२

अनुकंपा की चेतना के उत्प्रेरक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः १५ किलोमीटर विहार कर धनेरिया ग्राम में पधारे। अहिंसा के प्रेरक आचार्यश्री ने फरमाया कि एक सिद्धांत है कि जीव-प्राणी पुनर्जन्म ग्रहण करता है। यह पुनर्जन्म का सिद्धांत आस्तिकवाद में सम्मत है। जहाँ आत्मा का शाश्वत अस्तित्व सम्मत होता है, वहाँ यह पुनर्जन्मवाद भी संभव हो सकता है।

जहाँ यह केवल शरीर इसके बाद कुछ नहीं, इसके पहले भी कुछ नहीं तो पुनर्जन्म की बात संभव नहीं हो सकती। पुनर्जन्म है, तो पुर्वजन्म अपने आप सिद्ध हो जाता है। पुनर्जन्म के सिद्धांत के साथ कर्मवाद की बात भी जुड़ी हुई है कि प्राणी जैसा कर्म बंध करता है, उसके अनुसार उसका आगामी जन्म होता है। आदमी दुराचार, कदाचार से बचे। सदाचार के पथ पर चले।

कोई प्रश्न करे कि पुनर्जन्म होता है, इसका क्या प्रमाण है तो प्रति प्रश्न होता है कि पुनर्जन्म होता नहीं है, इसका प्रमाण क्या है? परलोक है या नहीं पर आदमी अशुभ कार्यों से बचे, शुभ कार्य करता रहे। परलोक है तो अच्छा फल मिल जाएगा। परलोक नहीं तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। एक प्रसंग से समझाया कि अगर खराब काम किए और पुनर्जन्म है तो आगे जूते पड़ेंगे।

आदमी को जीवन अच्छा जीना चाहिए। अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रत स्वीकार करो। अणुव्रती तो जैन-अजैन कोई भी बन सकता है। अध्यात्म का महल पुनर्जन्म के सिद्धांत, आत्मा और कर्मवाद पर टिका हुआ है। पुनर्जन्म के आधार पर जीवन की शैली का निर्माण करें। जीवन अच्छा जीएँ। जब तक मोक्ष प्राप्त नहीं होगा, पुनर्जन्म होता रहेगा।

अहिंसा धर्म है, सुख-शांति का कारण है। कोई प्राणी हंतव्य नहीं हैं पुनर्जन्म अच्छा हो तो अहिंसा के रास्ते पर चलो। अहिंसा, संयम, तप जीवन में है तो आत्मा का कल्याण होना ही है। मारवाड़ के क्षेत्र आचार्य भिक्षु से जुड़े हुए क्षेत्र हैं। कंटालिया, बगड़ी, सिरियारी तो तेरापंथ के ऐतिहासिक स्थल है। स्थानीय लोगों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाए।

व्यवस्था समिति द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय का प्रतीक चिह्न से सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मन को अपने वश कर, करें दुखों का नाश : आचार्यश्री महाश्रमण

भुवाल, २८ नवंबर, २०२२

जिनशासक प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः ७ किलोमीटर का विहार कर भुवाल पधारे। भुवाल माताजी का मंदिर प्रसिद्ध है। पूज्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में चित्त का बड़ा महत्त्व है। चेतना तो मूल तत्त्व है। यह शरीर इतना शोभायमान हो रहा है, यह चैतन्य का प्रभाव है। शरीर में जब तक आत्मा रहती है, तब तक शरीर सक्रिय बना रह सकता है।

चित्त हमारा अच्छा रहे। यह शरीर मानो चित्त पर आधारित है। शरीर का भी महत्त्व होता है। चित्त स्वस्थ रहे तो बुद्धियों की प्रस्फुरणा होती है। चित्त को दो संदर्भों में लिया जा सकता है। आत्मा और मन। हमारा मन प्रसन्न रहे। शरीर का बल महत्त्वपूर्ण है, तो मन का बल भी महत्त्वपूर्ण है। मनोबल मजबूत चाहिए।

आदमी को मानसिक दुःख होते हैं, वो मन के प्रमाद से होते हैं। प्रमाद है घृणा-चंचलता आदि। मन को वश में कर लिया जाता है तो दुःख भी फिर नाश को प्राप्त हो जाते हैं। हम सुमन रहें। दुनिया में बढ़िया काम भी मन वाले प्राणी कर सकते हैं। खराब काम भी मन वाला प्राणी ज्यादा कर सकता है। सातवीं नरक में समनस्क ही जाएगा। ऊँची गति में भी मन वाला प्राणी ही जा पाएगा। चाहे देवगति हो या मोक्ष गति।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के ६६वें जन्म दिवस पर मंगल आशीष प्रदान करते हुए फरमाया कि आपका शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और सामाजिक स्वास्थ्य अच्छा रहे। आज साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का ६६वाँ जन्म दिन है। साध्वीप्रमुखाश्री मनोनयन के बाद पहला प्रसंग आया है। आप चिरकाल तक अपनी सेवाएँ देती रहें। आपकी गहराई और ऊँचाई अच्छी रहे। यात्रा और कार्य अच्छा होता रहे। खूब चित्त समाधि में रहें व दूसरों को भी चित्त समाधि देते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि पूज्यप्रवर ने अनेक क्षेत्रों की यात्राएँ करवाई हैं। तीर्थ स्थलों, तेरापंथ के ऐतिहासिक क्षेत्रों एवं श्रद्धा के श्रावकों के घरों की यात्रा करवाई है। हमारी भक्ति आचार्य के प्रति होती है। आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर व्यक्ति कभी भी भौतिक कामनाओं के लिए अपने आराध्य के साथ ही तादात्म्य स्थापित करते हैं। हमारी भक्ति निर्गुण है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने कहा कि आचार्य राजकरंडक के समान होते हैं। सर्वगुण संपन्न होते हैं। हमें तेरापंथ धर्मसंघ जैसा विलक्षण धर्मसंघ मिला है। आचार्यप्रवर जनकल्याण का लक्ष्य ले आगे बढ़ रहे हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में अभयराज बैंगाणी, महिला मंडल, इंद्र बैंगाणी (मंदिर ट्रस्ट से), कन्या मंडल, संपतराज गुलगुलिया, रितिक बोथरा, भव्य ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में सदैव करें आध्यात्मिक सेवा....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अधर्मास्तिकाय का स्थिति में सहयोग है। आकाश स्थान देने में सहयोग करता है। छः द्रव्यों में एक पुद्गलास्तिकाय मूर्त है, बाकी पाँच अमूर्त है। पुद्गलास्तिकाय का भी कितना हम पर उपकार है। काल से समय की जानकारी मिलती है। जीवास्तिकाय एक-दूसरे का सहयोग-उपकार करती है।

साधु गृहस्थों से सेवा लेते हैं, तो वापस गृहस्थों की आध्यात्मिक सेवा करते हैं। हम जीवन में दूसरों को आध्यात्मिक-धार्मिक जो सेवा दे सकें, देने का प्रयास करना चाहिए।

आज नागौर जिले को छोड़ पाली जिले में आ गए हैं। यहाँ तो तेरापंथ के कई ऐतिहासिक क्षेत्र हैं। परमपूज्य आचार्यश्री भिक्षु का विहार क्षेत्र है। यहाँ भी खूब धार्मिक शांति रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में महावीर बोहरा, कन्हैयालाल सिंघवी, बसंत सिंघवी, माणक, शांताबाई, सुरेंद्र सालेचा (पाली सभाध्यक्ष), प्रमोद, गौतम छाजेड़ आदि ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने स्थानीय लोगों को सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाए।

स्कूल के प्रधानाध्यापक भवानी सिंह ने पूज्यप्रवर का विद्यालय प्रांगण में पधारने पर कृतज्ञता ज्ञापित की। व्यवस्था समिति की ओर से विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जैन महासती चंदनबाला अभिनय की प्रस्तुति

सूरतगढ़।

अमेरिका से यात्रा कर लौटी समणी जयंतप्रज्ञा जी एवं समणी सन्मतीप्रज्ञा जी ने सूरतगढ़ प्रवास में अनेक अनुष्ठानों, प्रवचनों एवं कार्यक्रमों से समाज को लाभान्वित किया। जैन धर्म के इतिहास से संबंधित प्रसिद्ध कथा चंपानगर की राजकुमारी चंदनबाला के शौर्य, विवेक, धैर्य और सदाचरण को दर्शाने वाली तथा भगवान महावीर की शरण तक पहुँचने की जीवन कथा पर आधारित नाट्य मंचन अरूट भवन, सूरतगढ़ में किया गया। समणीद्वय से प्राप्त प्रशिक्षण, प्रेरणा और प्रोत्साहन से सभी कलाकारों ने प्रभावी ढंग से प्रस्तुति दी।

इस अभियान के मुख्य कलाकार अमृत चौपड़ा, राशि रांका, श्वेता रांका, जयश्री बांठिया, हिमांशी जैन, नेहा बैद, रिद्धि नौलखा, सोनम एवं ऋतु चोपड़ा थे।

इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में स्थानीय जैन समाज के अतिरिक्त सूरतगढ़ के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लक्ष्मी देवी नौलखा, विशिष्ट अतिथि शिष्य एवं माटी कला बोर्ड के अध्यक्ष डूंगर राम गेदर (राज्यमंत्री), नगरपालिका सूरतगढ़ अध्यक्ष ओमप्रकाश कालवा, भूतपूर्व आंचलि अध्यक्ष मांगीलाल रांका स्थानीय कांग्रेस अध्यक्ष परसराम भाटिया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

महिला मंडल अध्यक्षा पूनम जैन ने समणी जी के प्रवास की उपलब्धियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। तेयुप अध्यक्ष अजय कुमार बोथरा ने आभार व्यक्त किया।

तेममं की अध्यक्षा एवं मंत्री सरिता रांका तेयुप के अध्यक्ष अजय बोथरा, मंत्री, अमृत चोपड़ा एवं उनकी टीम ने पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था को संचालित किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने संस्कार गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेममं की पाँच सदस्याओं के द्वारा किया गया। संचालन अमृत चोपड़ा ने किया।

मुमुक्षु मंगलभावना समारोह का आयोजन

कोटा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि दुनिया में कुछ ऐसे विरल व्यक्ति होते हैं जो भौतिकता की चकाचौंध में भी अपने जीवन में अध्यात्म का दीप प्रज्वलित कर अपने संपूर्ण जीवन को आलोकित कर लेते हैं। कुछ ऐसे भी संकल्पी पुरुष इस धरती पर पैदा हुए हैं, जो असंयम के कोलाहल में संयम का शंखनाद कर अपनी सोई शक्ति को जागृत कर लेते हैं।

बालक प्रबुद्ध बचपन से ही संयम का संस्कार लेकर आया और इस चातुर्मास में उसे सिंचन मिला। एक नन्हा-सा बीज पल्लवित व पुष्पित होने के लिए मुमुक्षु बनने के लिए गुरुचरणों में प्रस्तुत हो रहा है।

बालक प्रबुद्ध ने कहा कि मैं साध्वी अणिमाश्री जी एवं सभी साध्वीवृंद का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे भीतर नई प्राणवत्ता का संचार किया। मेरी सोई शक्ति को जागृत किया। आपकी प्रेरणा व प्रोत्साहन से ही मैं संयम-पथ पर बढ़ने के लिए तैयार हुआ। साध्वी कणिकाश्री जी ने विचार रखे। साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने मंच का संचालन किया।

सभाध्यक्ष संजय बोथरा, तेयुप मंत्री कमलेश जैन, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष अशोक दुगड़, महिला मंडल अध्यक्ष उषा बाफना सहित अनेक पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। प्रियंका पारख का अच्छी सेवा एवं मीडिया कार्य के लिए सम्मान किया गया। सभा, महिला मंडल की ओर से प्रबुद्ध का भी सम्मान किया गया।

> ✦ *करने से पूर्व अच्छी तरह सोचो। फिर जो होता है, उसे प्रसन्नता से स्वीकार करो।*
>
> **– आचार्यश्री महाश्रमण**

उपसर्गहर स्तोत्र-विशेष अनुष्ठान का आयोजन

रोहिणी, दिल्ली।

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में उपसर्गहर स्तोत्र-विशेष अनुष्ठान' तेरापंथ भवन में संपन्न हुआ। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि आचार्य भद्रबाहु द्वारा निर्मित यह स्तोत्र प्रभावकारी, मंगलकारी, विघ्नबाधा हारी है। इस मंत्र के प्रभाव से कहते हैं साक्षात दैविक शक्तियाँ उपस्थित हो मानो कामना पूर्ण करती थीं।

साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मुख्य अतिथि डॉ० राजेश कुंडलिया (कैंसर डिपार्टमेंट के हेड) निष्ठा के साथ सेवा करते हैं। संघ-संघपति के प्रति इनका समर्पण बेजोड़ है।

डॉ० राजेश कुंडलिया ने कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे लगभग ६०-७० जैन साधु-साध्वियों की सेवा करने का मौका मिला। उन्होंने कहा कि मेरे गुरु आचार्य महाश्रमण जी की मुझे समय-समय पर मंगल प्रेरणा मिलती है।

इस अवसर पर विजय जैन तेरापंथ सभाध्यक्ष ने कहा कि डॉ० राजेश सभी को जीवन दान देते हैं, उन्हें बहुत साधुवाद एवं मंगलकामना। रोहिणी वरिष्ठ उपाध्यक्ष उत्तम छाजेड़ ने कहा कि डॉ० राजेश जैन एक ऐसे प्रख्यात डॉक्टर हैं जो जन-जन के शारीरिक रोगों को दूर करने के साथ उन्हें स्वस्थ जीवनशैली के लिए प्रेरणा भी देते हैं।

इस अवसर पर विजय जैन अध्यक्ष, उत्तम छाजेड़ उपाध्यक्ष, राजकुमार जैन ने साहित्य और फोटो द्वारा डॉ० राजेश का सम्मान किया। वीरेंद्र मोहन जैन, सारिका जैन, अमिता पटावरी एवं राजरानी जैन जो साध्वी कुंदनरेखा जी के संसारपक्षीय परिवार हैं, उन्होंने भी डॉ० राजेश का सम्मान कर हर्ष का अनुभव किया। साध्वी कल्याणयशा जी ने मंगलाचरण गीत के संगान से किया।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

जसोल।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में ऐतिहासिक सफलतम चातुर्मास की परिसंपन्नता पर मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार चातुर्मास पूर्ण किया। यहाँ के भाई-बहनों में बहुत उत्साह व भक्ति, समर्पण देखने को मिला। यहाँ के लोगों में ज्ञान के प्रति जागरूकता व तत्त्वज्ञान में रुचि है। यह आध्यात्मिक धरती है।

साध्वीश्री जी ने बताया कि गुरुदेव की दृष्टि व इंगित से हमने जसोल चातुर्मास किया यह धरती उर्वरा है, यहाँ लोगों में धर्म के प्रति अच्छी भावना है। यहाँ के भाई-बहनों में संघ व संघपति के प्रति अटूट श्रद्धा भक्ति देखने को मिली। लोगों में धर्म के प्रति अच्छी जागरूकता रहे व अपनी जीवनशैली को आत्मशुद्धि, निर्मल व अच्छा बनाने में तत्पर रहे। सभी भाई-बहनों से ४ माह में हम साध्वीश्री के द्वारा आपके मन को ठेस पहुँची हो तो खमतखामणा करते हैं।

सभी भाई-बहनों ने पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर साध्वीश्री के प्रति अपने भावों से शुभकामनाएँ व भावी आध्यात्मिक मंगलकामना की। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कई अलग-अलग विषयों द्वारा आत्मज्ञान दर्शन की प्रेरणा प्रदान की। साध्वी ध्यानप्रभा जी, साध्वी श्रुतप्रभा जी, साध्वी यशस्वीप्रभा जी आदि साध्वीवृंद ने अपने विचार व्यक्त किए।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़, शंकरलाल ढेलड़िया, गौतमचंद सालेचा, भूपतराज कोठारी, पारसमल गोलेच्छा, सुरेंद्र कुमार सालेचा सहित अनेक पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। तेममं, कन्या मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा सामूहिक गीतों के द्वारा मंगलकामना की। कार्यक्रम का संचालन कुनिका बाधमार ने किया।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा

(ज्ञानशाला प्रकोष्ठ)

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा वर्ष - २०२२

परीक्षा दिनांक : ८ जनवरी, २०२३ रविवार, समय : २ से ४ (दो घंटे)

परीक्षा स्थल : स्थानीय ज्ञानशाला संचालन स्थल (तेरापंथ भवन)

परीक्षार्थी : ज्ञानशाला में अध्ययनरतन बालक-बालिकाएँ

प्रश्नपत्र : ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा प्रेषित प्रश्न पत्रों के आधार पर मौखिक परीक्षा का पूरे देश में एक ही दिन एक ही समय पर आयोजन।

परीक्षा केंद्र : परीक्षा आयोजन हेतु परीक्षा केंद्र स्थापना की माँग आवेदन पत्र फार्म संख्या ३ में भरकर आवेदन करवाए।

प्रत्येक ज्ञानशाला में ज्ञानार्थी परीक्षाओं का आयोजन अनिवार्य है। ज्ञानशालाओं के वार्षिक मूल्यांकन व चयन प्रक्रिया में इस बिंदु को ध्यान में लिया जाएगा। सभा-संस्थाएँ इस दिन (०८-०१-२०२३) पिकनिक या भ्रमण का कार्यक्रम न रखें।

संपर्क : ज्ञानार्थी परीक्षा जानकारी हेतु ज्ञानशाला **परीक्षा विभाग संयोजक सुरेंद्र लुणिया का मो० नं० ०९३२८०३३६५६** पर संपर्क कर सकते हैं।

अध्यक्ष

सीए सोहनराज चौपड़ा
(ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक)
मो० नं० : ०९४२६१७१५१८

महामंत्री

आध्यात्मिक मिलन समारोह

सरदारपुरा, जोधपुर।

सरदारपुरा स्थित मेघराज भवन में मुनि रजनीश कुमार जी व शासनश्री सत्यवती जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ।

मुनि रजनीश कुमार जी आदि संत उमेद हेरिटेज, जोधपुर से विहार कर सरदारपुरा श्रावक समाज के साथ मेघराज तातेड़ भवन में पहुँचे। विराजित साध्वी सत्यवती जी आदि साध्वियों ने अगवानी कर मुनिश्री का स्वागत किया।

इस अवसर पर तेरापंथ समाज के श्रावक-श्राविकाओं इस आत्मीय मिलन के दृश्य को देख आत्मविभोर हो गए।

तेरापंथ सभा, तेयुप, सरदारपुरा, टीपीएफ, महिला मंडल के सदस्यों ने रास्ते की सेवा में सहभागिता दर्ज कराई।

महिला मंडल के विविध आयोजन

दा पॉवर ऑफ पोजिटिविटी शिल्पशाला का आयोजन

दिल्ली।

अभातेमम के निर्देशानुसार दिल्ली महिला मंडल द्वारा नवंबर माह की शिल्पशाला 'दा पॉवर ऑफ पोजिटिविटी' पर कार्यशाला का आयोजन शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण हुआ।

अध्यक्षा मंजु जैन ने सभी का स्वागत करते हुए सकारात्मक सोच पर अपने विचार प्रकट किए एवं आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

मुख्य वक्ता रमेश कांडपाल ने कहा कि हमारे पास अणुव्रत का दर्शन है, प्रेक्षाध्यान की औषधि है, जीवन-विज्ञान में जीवन जीने की कला है। सकारात्मकता हमारे भीतर ही है बस आवश्यकता है उसे सही ढंग से अपनाने की।

शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने कहा कि अच्छा सोचें, ऊँचा सोचें और सार्थक सोचें, तभी अच्छे विचारों का उन्नयन होगा और अच्छे कार्य हमारे सामने आएँगे एवं एक अच्छा समाज अच्छे परिवार का निर्माण होगा।

शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। साध्वी ओजस्वीप्रभा जी ने कहानी के माध्यम से सकारात्मक सोच के प्रभाव को समझाया।

तत्त्वज्ञान तेरापंथ दर्शन की राष्ट्रीय सह-संयोजिका कुसुम बैंगानी एवं दिल्ली की व्यवस्थापिका कमला भंसाली के द्वारा तत्त्वज्ञान तेरापंथ दर्शन और तत्त्व विज्ञ के सर्टिफिकेट वितरित किए गए।

कार्यक्रम का संचालन तथा आभार ज्ञापन मंत्री यशा बोथरा ने किया।

कार्यक्रम के अंत में बहनों द्वारा घर से बनाकर लाए गए भोजन से गोचरी का लाभ भी लिया गया। कार्यक्रम में कुल २५ बहनों की उपस्थिति रही।

प्रबोध गीतिका प्रतियोगिता का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में डीवी कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रबोध गीतिका की प्रतियोगिता रखी गई। जिसमें तेरापंथ प्रबोध के १ से ३१ तक के श्लोक भाई-बहनों को याद करने के लिए दिए गए। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने बताया कि यह गीतिका आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित है। आचार्यश्री भिक्षु स्वामी के मूल सिद्धांत इस गीतिका में भरे हुए हैं। इस प्रतियोगिता में साध्वी कल्पयशा जी एवं साध्वी रश्मिप्रभा जी का अथक प्रयास रहा। साध्वीश्री जी की प्रेरणा से लगभग ४० भाई-बहनों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। १० ग्रुप बनाए गए। प्रोजेक्टर के माध्यम से तीन राउंड में यह प्रतियोगिता खिलाई गई।

जिसमें प्रथम संतोष पींचा, कमला नाहटा, द्वितीय नीता डागा, मोनिका डागा, मंजु दुगड़ और तृतीय संगीता बैद, सुमति बैद, हुक्मीचंद कोटेचा, कलकाती बाई, जीतने वाले सभी भाई-बहनों को मंडल की ओर से पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया।

मंत्री श्वेता सेठिया ने पधारे हुए सभी भाई-बहनों का स्वागत किया। साध्वीश्री जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता और आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में प्रियंका सकलेचा, अरिहंत गुजरानी, कुशाल भंसाली, मीनाक्षी सुराणा का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम की संयोजिका निशा दुगड़, डिंपल बैद, सुनीता बंबोली थी।

कलर थैरेपी सीजन एंड एंजिल-नंबर कार्यशाला

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं द्वारा आरआर नगर में स्वस्थ समाज स्वस्थ परिवार के अंतर्गत कलर थैरेपी सीजन एंड एंजिल नंबर कार्यशाला का आयोजन शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में किया गया। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया।

अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत किया। आज की व्यस्त जिंदगी में हर व्यक्ति कुछ न कुछ शारीरिक समस्या से ग्रसित है। समस्याओं से निदान पाने के लिए इस कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर साध्वी अर्हमप्रभा जी ने महती कृपा करके बहनों को अनिद्रा, कमर दर्द, बुखार, सर्दी, बीपी, एलर्जी, थायराइड आदि बीमारियों से निजात पाने के लिए विशेष रूप से बहनों को कलर थैरेपी हस्त मुद्राओं एवं एंजिल नंबर की सहायता से आरोग्यमय सेहत प्राप्त करने के गुर बताए।

उपाध्यक्ष शोभा बोथरा, सहमंत्री मंजु बोथरा, हेमलता सुराना एवं कार्यकारिणी सदस्य बहनें अच्छी संख्या में उपस्थित थी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। धन्यवाद ममता दुगड़ ने दिया।

सुख साधनों में नहीं, आत्मा में है

टी-दासरहल्ली।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम द्वारा शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में कार्यशाला का आयोजन हुआ। अध्यक्ष रेखा मेहर ने वक्तव्य के साथ सभी का स्वागत किया।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि भारतीय ऋषि-महर्षियों का त्याग प्रधान, संयमी जीवन हर व्यक्ति के लिए आदर्श है, अनुकरणीय है। इच्छाएँ अपरिमित हैं। यह भगवान महावीर की वाणी है। सुख पदार्थ में नहीं, आत्मा में है। अपेक्षा है हर धार्मिक व्यक्ति स्वयं का निरीक्षण कर अत्यधिक संग्रह से बचे, अनित्यता की अनुपेक्षा करने वाला व्यक्ति अनासक्त रह सकता है।

सभी साध्वीवृंद ने एवं रेखा मेहर व नेहा चावत ने अपने विचार व्यक्त किए। बबिता गांधी ने आभार व्यक्त किया।

सास-बहू सेमिनार का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेमम द्वारा निर्देशित स्वस्थ समाज, स्वस्थ परिवार के अंतर्गत 'सास-बहू सेमिनार' का आयोजन तेमम आर०आर० नगर द्वारा शासनश्री साध्वीश्री के सान्निध्य में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण मंडल की बहनों द्वारा किया गया।

समागत सभी का स्वागत अध्यक्ष लता बाफना ने किया एवं सास-बहू के खट्टे-मीठे रिश्तों के बारे में अपने विचार रखे। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने गीतिका के द्वारा अपने विचार रखे। साध्वी अमितरेखा जीने कहा कि पहले की महिलाओं में त्याग और संस्कार की भावना रहती थी और वे एक-दूसरे को इसकी प्रेरणा भी देती थी।

साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि जिस दिन हम सास में माँ और बहू में बेटी देखने लगेंगे घर मंदिर बन जाएगा। उन्होंने कहा कि हमें मधु की तरह बोलना, देखना और सोचना चाहिए।

तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत आयोजित तत्त्व ज्ञान एवं तत्त्व दर्शन परीक्षार्थी बहनों का सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया। खुशबू कोचर ने तत्त्व दर्शन परीक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। अच्छी संख्या में सास-बहू के जोड़े उपस्थित रहे। अभातेमम की कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। आभार सहमंत्री हेमलता सुराणा ने किया।

सुमधुर गीतों के संग हास्य कवि समारोह

मंडिया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा सुमधुर गीतों के संग हास्य कवि समारोह तेरापंथ सभा भवन, मंडिया में आयोजित किया गया।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि संगीत का काव्य जीवन का दिव्य आनंद है। जो भाषण मन को छू नहीं सकता, वह संगीत व काव्य की मधुर स्वर लहरी व्यक्ति को भीतर तक बदल देती है। वर्तमान में संगीत के द्वारा अनेक प्रकार की चिकित्सा की जा रही है, वह चिकित्सा सफलता के शिखर तक भी पहुँच रही है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कविता के द्वारा कहा कि युवा शक्ति में जोश अत्यधिक होता है, उसे व होश के साथ उपयोग में ले तो कामयाबी हासिल कर सकता है। मंडिया तेयुप की जागरूक व उत्साही परिषद है।

साध्वी मेरूप्रभा जी, साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की।

कवि सम्मेलन का आगाज महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। इसके बाद राजस्थान के सुप्रसिद्ध गायक एवं हास्य कवि प्रकाश श्रीश्रीमाल ने अपनी स्वयं की रचनाओं के गीतों द्वारा श्रावक-श्राविकाओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक ने पधारे हुए कवि व सभी श्रोताओं का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का संचालन किया। मंडिया से गायिका रीतू दक ने गीत प्रस्तुत किया। महक भंसाली ने भी प्रस्तुति दी। किशनलाल आच्छा, विनोद भंसाली ने भाव रखे। सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक ने सभी का स्वागत करते हुए हास्य कवि प्रकाश श्रीश्रीमाल का मोमेंटो द्वारा अभिवादन करते हुए अपने भाव रखे। तेयुप मंत्री कमलेश गोखरू ने आभार ज्ञापन किया।

तात्कालिक प्रश्नोत्तरी एवं मंगलभावना समारोह

भीलवाड़ा।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में विशाल डागा के निवास पर 'ऑन दा स्पॉट क्विज' का कार्यक्रम संचालित हुआ। साध्वी डॉ० परमयशा जी ने कहा कि सभी धर्म, तप, त्याग एवं अध्यात्म से अपने व्यक्तित्व का विकास करें। छोटे-छोटे संकल्पों द्वारा अपने श्रावकत्व को पुष्ट करें।

साध्वी विनम्रयशा जी ने अध्यात्म से जुड़ने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी कुमुदप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण से की। ऑन दा स्पॉट प्रश्नोत्तरी जिसके अंतर्गत सामान्य ज्ञान, जैन धर्म एवं दिमागी कसरत से जुड़े प्रश्न पूछे गए।

कार्यक्रम का संचालन ज्योति दुगड़ ने किया।

साध्वी परमयशा जी द्वारा भी प्रश्न पूछे गए। सही उत्तर देने वाले सभी भाई-बहनों को विशाल डागा एवं राकेश दुगड़ की ओर से पुरस्कृत किया गया।

साध्वीश्री जी के प्रति मंगलभावना का संक्षिप्त कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें उपस्थित श्रावक समाज ने अपनी भावनाएँ प्रस्तुत की। बच्चों ने भी इस कार्यक्रम में उत्साह से भाग लिया।

मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि साध्वी डॉ० परमयशा जी के विहार संबंधी जानकारी दी।

> ✦ ज्ञान प्राप्ति के लिए बहुश्रुत की उपासना करनी चाहिए और विवेकशील व्यक्तियों से मार्गदर्शन लेना चाहिए।
>
> – आचार्यश्री महाश्रमण

मासखमण तप अभिनंदन समारोह

गंगाशहर।

सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कीर्तिलता जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा संजू लालानी का तप अभिनंदन समारोह आयोजित हुआ। प्रदीप कुमार लालानी की धर्मपत्नी संजू लालानी ने ३० दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

साध्वी कीर्तिलता जी ने कहा कि तप का बहुत बड़ा महत्त्व है। तप की शक्ति के सामने देवराज इंद्र भी नतमस्तक हो जाते हैं। तपस्या में बहुत बड़ी शक्ति निहित है। तपस्या एक औषधि है जो ना तो धरती पर उपजती है ना ही आकाश में प्रकट होती है। यह तो आत्मबल से ही उपजती है। उन्होंने उपवास के द्वारा कई बीमारियों के निदान होने की बात कही।

साध्वी ललितकला जी ने कहा कि संजू लालानी ने बड़ा मासखमण कर तप का कलश चढ़ाया है। व्यक्ति की प्रथम आवश्यकता होती है—भोजन व पानी। जिस व्यक्ति के पास अनासक्ति की चेतना व कर्म निर्जरा की भावना होती है, वही तपस्या कर सकता है। उन्होंने तपस्विनी के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना की।

समारोह का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण गीत से हुआ। तपस्विनी के पारिवारिक जनों एवं पीहर पक्ष से छाजेड़ परिवार ने गीतिका प्रस्तुत की।

संजू लालानी पूर्व में १ से ६ तक की लड़ी, १३, १५ व २७ दिन की तपस्या कर चुकी हैं।

अनुमोदना के क्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेमम अध्यक्ष ममता रांका, तेयुप कोषाध्यक्ष दीपक बोथरा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा, प्रदीप लालानी, राजेंद्र सेठिया, पवन छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। पारिवारिक सदस्यों ने गीत की प्रस्तुति दी।

सम्मान के क्रम में अमरचंद सोनी, नवरतन बोथरा, जतन संचेती, ममता रांका, कविता चोपड़ा, मधु छाजेड़, मंजु आंचलिया, बिदु छाजेड़, रेणु बाफना, भरत गोलछा, दीपक बोथरा एवं देवेंद्र डागा आदि पदाधिकारियों ने तपस्वी का साहित्य व अनुमोदना पत्र द्वारा सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री रतनलाल छलाणी ने किया।

सर्वधर्म आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में अर्हम भवन के प्रांगण में सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। निधि चावत के मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का आगाज हुआ। बी०बी० अशोक कुमार पूर्व एसीपी कर्नाटक राज्य सरकार द्वारा जैन ध्वज लहराकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने पधारे हुए सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में एमएलए कृष्णपाजी ने पधारकर मुनिश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया। विशेष अतिथि के रूप में डॉ० मलयाशांति मुनि शिवाचार्य स्वामी जी, भारत को विश्व गुरु कहते हुए कहा कि साधु-संत के समागम से श्रेष्ठ विचार का जन्म होता है।

बलजीत सिंह सिख गुरु जी ने कहा कि गुरुनानक ने ३ विशेष बात रखी, सेवा, समर्पण एवं श्रद्धा से मानव को जीवन सुधारना है। सिस्टर जेसिंथा पेरेरियाजी ने जीसस के सिद्धांत को सबको बताया। मौलाना अब्दुल गफ्फार शेख जी ने इंसानियत की बात करते हुए देश में अमन के लिए हम सबको मोहब्बत की राह पर चलना चाहिए।

श्रवण लक्ष्मण, मठ नागराज स्वामी, आनंद होसुर ने अपने विचार रखे। प्रायोजक परिवार मारुति मेडिकल से महेंद्र मुणोत ने सभी को बधाई दी। कार्यक्रम के संयोजक बी०वी० चंद्रशेखरया ने अपनी भावना प्रेषित की।

संचालन निवर्तमान अध्यक्ष राजेश चावत ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री मंगल कोचर ने किया।

मंत्र साधना में आस्था का विश्वास जरूरी

माधावरम्।

तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट की आयोजना में मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण तेरापंथ जैन विद्यालय के प्रांगण में पंच ऋषि जप महानुष्ठान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनिश्वरनाथ भंडारी पीएमएलए के चेयरमैन, मंत्री एल मुरुगन विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि जप आस्था, श्रद्धा, विश्वास के साथ करना चाहिए। आपने पंच ऋषि की साधना एवं चतुर्थ आचार्यश्री जीतमल जी के जीवन के साथ जुड़ी घटनाओं का उल्लेख किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

❋ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
❋ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
❋ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
❋ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
❋ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
❋ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
❋ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
❋ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
❋ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
❋ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
❋ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
❋ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
❋ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

भूमि पूजन

लाडनूं।

लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर में महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल हेतु विमल विद्या विहार के पास में भूमि पूजन का मांगलिक कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मेन्द्र डागलिया, इंद्र बैंगानी, चमन दुधोड़िया द्वारा मांगलिक मंत्रोच्चार और आध्यात्मिक गीतों के संगान के साथ संपन्न करवाया गया।

रतनगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी मुख्य अनुदानदाता एवं जोधराज बैद एवं जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, महामंत्री सलिल लोढ़ा, मुख्य न्यासी रमेश बोहरा, निवर्तमान अध्यक्ष मनोज लुनिया, धर्मचंद लुंकड़ आदि अन्य गणमान्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में यह मांगलिक आयोजन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर समाज की अन्य केंद्रीय संस्थाओं और स्थानीय सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित रहे। सलिल लोढ़ा ने संस्थान की तरफ से मुख्य अनुदानदाता परिवार, तीनों संस्कारकगण एवं पधारे हुए सभी जनों का आभार व्यक्त किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

साहूकारपेट, चेन्नई।

मीठालाल मनोज कुमार हर्ष गादिया के प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पदमचंद आंचलिया, स्वरूपचंद दांती, मांगीलाल पितलिया, हनुमान सुखलेचा ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

संस्कारकों द्वारा मंगलभावना पत्रक परिवार को भेंट किया गया। इस अवसर पर गादिया परिवार के साथ तेयुप पूर्वाध्यक्ष संजय भंसाली, सभा पूर्वाध्यक्ष तनसुखलाल नाहर, नथमल आच्छा, विजयकुमार सेठिया, मनोज डूंगरवाल आदि ने संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

बीकानेर निवासी नवीन-संतोष सुराणा के नूतन गृह का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक पीयूष लुणिया और भरत गोलछा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

तेयुप उपाध्यक्ष विनीत बोथरा सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

विजयनगर।

सरदारशहर निवासी, बैंगलोर प्रवासी पीयूष डागा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक विकास बांठिया एवं धीरज भादानी ने करवाया।

डागा परिवार ने तेयुप का आभार व्यक्त किया। परिषद द्वारा परिवार को मंगलकामना पत्र एवं मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी दर्शन-करुणा सेठिया के नूतन गृह का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पवन छाजेड़ और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

इस अवसर पर तेयुप सहमंत्री ऋषभ लालाणी सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे।

नामकरण संस्कार

पर्वत पाटिया।

नेहा-ऋषभ चोपड़ा के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक रवि मालू व पवन कुमार बुच्चा ने मांगलिक मंत्रोच्चार का संगान कर संपादित करवाया।

तेयुप अध्यक्ष प्रदीप पुगलिया व वापी सभा उपाध्यक्ष गुलाब चोपड़ा की उपस्थिति रही। परिवार की तरफ से तेयुप अध्यक्ष व संस्कारकगण के प्रति आभार ज्ञापित किया। तेयुप की ओर से स्मृति चिह्न के रूप में चोपड़ा परिवार को मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई।

✦ *विनय करने वाला छोटा नहीं, दुनिया का बड़ा आदमी होता है। फिर विनय करने में संकोच क्यों होना चाहिए?*
—आचार्यश्री महाश्रमण

दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह का आयोजन

सरदारशहर।

सरदारशहर वासियों के लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि पूज्यप्रवर ने महती कृपा कर सरदारशहर के दक्ष नखत सुपुत्र दीपक-बिंदु देवी नखत की जैन भगवती दीक्षा ८ दिसंबर, २०२२ को सिरियारी में फरमाई है।

तेरापंथ भवन में दीक्षार्थी मुमुक्षु दक्ष नखत का भव्य वरघोड़ा उनके पैतृक निवास बच्छराज नखत के निवास, जवाई चौक से रवाना होकर सुजानमल दुगड़ के पैतृक निवास से होते हुए पुरानी एलआईसी रोड, मेन बाजार, घंटाघर से होते हुए तेरापंथ भवन पहुँचा।

साध्वी सुमतिप्रभा जी की सन्निधि में दीक्षार्थी भाई की अभिवंदना में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। महिला मंडल की तरफ से अनीता धाड़ेवा ने मंगलाचरण किया। मुमुक्षु सलोनी बाई ने अपने लाड़ले भाई के प्रति उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि तुम हमेशा गुरुदेव की इंगित की आराधना करना, साधु जीवन के अचार-विचार के प्रति जागरूक रहना।

साध्वी चारित्रयशा जी ने कहा कि माता-पिता, पारिवारिक जन धन्य होते हैं जो अपने कलेजे की कोर को गुरु चरणों में समर्पित करते हैं। मुमुक्षु दक्ष सौभाग्यशाली है कि इसकी मम्मी ने इसे बचपन से ही ऐसे संस्कारों में ढाला।

साध्वी सुमतिप्रभा जी ने कहा कि यह मेरे संसारपक्षीय भुआसा का पोता है। बचपन से ही इसके मन में त्याग-वैराग्य की प्रवृत्ति रही है। जब यह ५ वर्ष का बच्चा था तब सन् २०१४, दिल्ली चातुर्मास में इसे एक दिन सेवा करा रही थी और दीक्षा के लिए प्रेरित कर रही थी तब साध्वी विशालयशा जी एक कागज का टुकड़ा लाई जिस पर लिखा हुआ था—मैं दीक्षा लूँगा। उस पर इसने अपने हस्ताक्षर कर दिए। आज इसने जैसा कहा था वैसा करके दिखा दिया। इसके माता-पिता को साधुवाद जिन्हें अपने दोनों बच्चों का शत-प्रतिशत दान का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

दीक्षार्थी दक्ष ने कहा कि बच्चे परिवार, समाज व संघ का भविष्य हैं। माता-पिता का फर्ज बनता है कि उन्हें बचपन से ही धार्मिक संस्कार दें।

कार्यक्रम के दौरान सभा अध्यक्ष सिद्धार्थ चिंडालिया, तेरापंथी महिला मंडल अध्यक्षा सुषमा पींचा, तेयुप मंत्री धीरज छाजेड़, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष सुमन भाई भंसाली, ज्ञानशाला की तरफ से सुनीता कुंडलिया एवं हृदय मंडल, कन्या मंडल की तरफ से चंचल नखत, सभा मुख्य ट्रस्टी राजेश बुच्चा, नखत एवं दुगड़ परिवार ने सामूहिक गीतिका का संगान किया।

दक्ष के दादीसा मंजु देवी नखत, राजेश डोसी, सुजानमल दुगड़, दक्ष के पिताजी दीपक नखत, भंवरलाल नखत आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

सभा संस्थाओं की तरफ से दीक्षार्थी दक्ष नखत का जैन ध्वज पहनाकर एवं धार्मिक पुस्तकें भेंट कर सम्मान किया गया। श्रावक समाज की कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही।

गुरुदेव तुलसी की अमूल्य देन है-ज्ञानशाला

विजयनगर।

मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत बच्चों के मंगलाचरण से हुई। अध्यक्ष प्रकाश गांधी ने सभी का स्वागत करते हुए ज्ञानशाला के प्रायोजक परिवार मोहनी देवी की पुण्य स्मृति में हनुमानमल संजय मनोज बैद परिवार, नोखा के प्रति धन्यवाद प्रेषित किया। बैंगलोर संयोजिका नीता गादिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

ज्ञानशाला संयोजिका मनीषा घोषल ने सभी का स्वागत करते हुए कहानी के माध्यम से बच्चों को बताया कि किसी भी समस्या का समाधान एक-दूसरे की सहायता करके निकाला जा सकता है। बच्चों की कई प्रस्तुतियाँ रहीं।

रेखा पितलिया ने बच्चों से योगा की प्रस्तुति करवाई। ज्ञानशाला कर्नाटक आंचलिक सह-संयोजक सुरेश नाहर ने अपने विचार व्यक्त किए। मुनि रश्मि कुमार जी ने बताया कि छोटे-छोटे बच्चे ज्ञानशाला में आकर अपना विकास करते हैं। ज्ञानशाला में जो बच्चों को संस्कार मिलते हैं वह उनके अंतिम समय तक साथ रहते हैं।

स्नातक उपाधि धारक प्रशिक्षिका बहनों का मोमेंटो द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी बच्चों को भी सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में सभा एवं महिला मंडल के पदाधिकारीगण तथा श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन रेखा पितलिया ने किया। आभार ज्ञापन उषा चंडालिया ने किया।

निर्माण-उम्मीद एक बेहतर कल की कार्यशाला

हैदराबाद।

अभातेमम के निर्देशानुसार, तेमम द्वारा 'निर्माण-उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यशाला का प्रथम चरण ऋषि पब्लिक स्कूल, बशीरबाग में किया गया। अध्यक्ष अनीता गिड़िया ने बताया कि मंडल की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला प्रारंभ की गई।

केंद्र द्वारा निर्देशित प्रारूप के अनुसार समिति सदस्य डिंपल बैद ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया तथा कान और नेत्रों की यौगिक क्रियाओं के बारे में जानकारी दी।

गीतिका नाहटा ने बच्चों को ताड़ासन करवाया और उसके लाभ बताए। नमिता सिंधी ने माता-पिता की सेवा पर ज्ञानवर्धक कहानी सुनाई। वातावरण को स्वच्छ किस प्रकार रखें, मंडल सदस्य वीनू नाहटा ने जानकारी दी।

वीनू नाहटा एवं शांता बैद ने रिजल्ट सुनाते हुए महिला मंडल की ओर से तोहफे वितरित किए। विद्यालय की प्रधानाचार्या ने अभातेमम के इस कार्यक्रम की प्रशंसा की तथा धन्यवाद व्यक्त किया। लगभग १६५ बच्चों की उपस्थिति रही।

अंत में अनुप्रेक्षा द्वारा कार्यशाला संपन्न की गई। संयोजिका मीनाक्षी सुराणा, डिंपल बैद का सहयोग रहा। कोषाध्यक्ष शांता बैद ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

सौभाग्य का अभ्युदय - मुणिन्द मोरा की ढाल

भीलवाड़ा।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में 'मुणिन्द मोरा' की ढाल के अनुष्ठान का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वी परमयशा जी ने कहा कि श्रीमद् जयाचार्य तेरापंथ शासन के एक प्रभावशाली असाधारण प्रज्ञा संपन्न आचार्य थे। वे श्रुत के महासागर, मंत्रों के विशेष ज्ञाता थे। उन्होंने विशिष्ट गीतों की रचना की। जिसमें मुणिन्द मोरा गीत खास है।

इस गीत में व्यक्तित्व बदलाव का फार्मूला है। तेजस्विता, तपस्विता की ऊँची मीनार है। यह मंत्र, यंत्र, तंत्र से आपूरित स्तवन न आयोजन, आंदोलन, अभियान और न ही प्रदर्शन है अपितु अंतर्मुखी चेतना के जागरण का महाघोष है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि डॉ० बसंतीलाल बाबेल भिक्षु शासन के एक श्रद्धा संपन्न, प्रतिभा संपन्न श्रावक हैं। आपकी संघ और संघपति के प्रति आस्था, निष्ठा बेजोड़ है। आपने न्याय विधि क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य किया है। आपने कहा कि राष्ट्रीय अणुव्रत समिति ने छापर में आचार्यश्री महाश्रमण जी की सन्निधि में निर्मल गोखरू को नवगठित अणुव्रत समिति में उपाध्यक्ष पद प्रदान किया गया। आपकी गुरु निष्ठा, गण निष्ठा, सेवा भावना, कार्यकुशलता, भीलवाड़ा तेरापंथ सभा के लिए गौरव व गर्व का विषय है। गुरु कृपा का अमृत आपको मिलता रहे। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि अनुष्ठान में श्रावक समाज ने उल्लास से भाग लिया। अनुष्ठान में नौ बार मुणिन्द मोरा ढाल का संगान किया गया।

अणुव्रत अपसेट को सैट करता है

गांधीनगर।

तेरापंथ भवन में मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि अति भोगवादी संस्कृति ने व्यक्ति को हिंसा के कगार पर ले जाकर खड़ा कर दिया है। मनुष्य ने अपनी सुविधा के लिए जिन संसाधनों का आविष्कार किया है वही साधन उसे समस्या के चक्रव्यू में फँसाते जा रहे हैं।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत का शंखनाद फूँका व छोटे-छोटे नियमों के द्वारा व्यक्ति के रूपांतरण की बात कही। उन्होंने कहा आदमी और कुछ बने या नहीं बने पहले 'गुड मैन' बने।

सहयोगी संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि नाम एक है पर कर्तृत्व व वक्तृत्व अनेक। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत की दीपशिखा से जगत का अंधेरा दूर किया। मुनि जयदीप कुमार जी ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, प्रेक्षा संगीत सुधा ने गीत की प्रस्तुति दी। तेमम एवं अणुव्रत समिति ने गीत की प्रस्तुति दी। शांति सकलेचा एवं हेमलता बुच्चा ने अपने विचार व्यक्त किए।

संस्कार निर्माण शिविर

आमेट।

तेरापंथ भवन में साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों का एक दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। शिविर में २७ ज्ञानार्थियों व ८ प्रशिक्षिकाओं ने भाग लिया। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने बच्चों को प्रेरणा देते हुए बताया कि आप अपनी जिंदगी में सदैव प्रसन्न रहें। प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति का सदैव आदर होता है।

साध्वी गौतमप्रभा जी ने बच्चों को सिखाया कि कैसे वे अपनी स्मरण शक्ति बढ़ाएँ।

सुमंगल साधिका जतन देवी बंब ने बच्चों को आसन, प्राणायाम कराए व उसके महत्त्व के बारे में बताया। जीवन में दैनिक कार्य की छोटी-छोटी महत्त्वपूर्ण टिप्स दी। गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के जन्म दिवस पर ज्ञानार्थियों ने प्रस्तुति दी। ज्ञानार्थियों को गिफ्ट व अल्पाहार दिया गया व संकल्प कराए।

शांति का संबंध मन से है

अमरनगर, जोधपुर।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सहवर्तनी साध्वी पुण्यदर्शना जी व साध्वी शशिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मंगलदीप में मंगल प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनें—दिलखुश तातेड़, चेतना घोड़ावत व सविता तातेड़ ने की।

साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज इंसान अपनी वृत्तियों का गुलाम बना हुआ है। हमारी दासता छूटे और चेतना के समीप अपने आपको लगाएँ।

साध्वी पुण्यदर्शना जी ने कहा कि व्यक्ति पुरुषार्थ करें। बिना पुरुषार्थ के हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते।

कार्यक्रम का आभार ज्ञापन आयोजक कैलाश सिंघवी द्वारा किया गया।

✦ *यह दुनिया में ईमानदारी छा जाए तो अनेक-अनेक समस्याओं को जन्मने का मौका ही नहीं मिलेगा।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

दीपावली मिलन महोत्सव का आयोजन

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के तत्त्वावधान में दीपावली मिलन महोत्सव का आयोजन हुआ। नमस्कार मंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मंगलाचरण नितेश धाकड़, दिनेश धाकड़, अशोक बरलोटा, अशोक धींग, रौनक धाकड़ ने गीत का संगान किया।

साध्वी सोमलता जी ने कहा कि चूने-मिट्टी से सुंदर बने मकान प्रसन्नता नहीं देते, बल्कि प्रेम, त्याग, सहिष्णुता, सौहार्द से सुसज्जित परिवार में ही खुशहाली होगी।

महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने २०२३ में आचार्यश्री महाश्रमण जी को राजकीय अतिथि के रूप में सम्मानित करने में अपनी भूमिका अदा करने की घोषणा की। हास्य कवि द्वारका प्रसाद जालान ने हास्यात्मक प्रसंगों के माध्यम से सुखद जिंदगी के रहस्यात्मक सूत्रों का उल्लेख किया। दिलीप सरावगी ने अपने विचार रखे।

साध्वी शकुंतला कुमार जी, साध्वी जागृतप्रभा जी ने गीत गाया। साध्वी संचितयशा जी ने सहिष्णुता की अनुप्रेक्षा व साध्वी रक्षितयशा जी ने कार्यक्रम की प्रस्तुति गीत से दी। महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष किशनलाल डागलिया ने स्वागत भाषण व कार्याध्यक्ष कुंदनमल धाकड़ ने अपनी भावना व्यक्त की।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया ने द्वारका प्रसाद जालान व देवेंद्र डागलिया ने राहुल नार्वेकर का परिचय दिया। मुंबई सभा के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। एस०के० जैन व डायरेक्टर ने महाप्रज्ञ विद्यालय की गतिविधियों का परिचय दिया व महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर वनिता ने पीपीटी के माध्यम से स्कूल की जानकारी दी।

कन्या मंडल, महिला मंडल व ज्ञानशाला ने 'नेम-राजुल' परिसंवाद की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन फाउंडेशन के मंत्री लक्ष्मीलाल डागलिया व सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप के अध्यक्ष नितेश धाकड़ ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

चेन्नई।

चेन्नई चातुर्मास के पश्चात आंध्र प्रदेश की ओर विहाररत साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी अपनी सहयोगिनी साध्वीवृंद के साथ केशरवाड़ी तीर्थ स्थल पहुँची जहाँ स्थानकवासी संप्रदाय के आचार्यश्री डॉ० शिवमुनि जी के शिष्य डॉ० वरुण मुनिश्री के साथ आध्यात्मिक मिलन हुआ।

मुनिश्री के सान्निध्य में चतुर्दिवसीय आत्म साधना शिविर में उपस्थित शिविरार्थियों एवं विहार यात्रा सेवार्थियों को संबोधित करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि ऋषियों की विहार यात्रा प्रशस्त होती है। आज सहज ही आध्यात्मिक मिलन का सुखद संयोग उपस्थित है। चेन्नई में मुनिवृंद से हमारा आध्यात्मिक मिलन हुआ और संयुक्त कार्यक्रम समायोजित हुआ है। मुनिवृंद का सात्त्विक व्यवहार, आत्मीय व्यवहार आकर्षित करने वाला है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि ध्यान की पद्धति जैन परंपरा में विशिष्ट अवदान है। वीतरागता की साधना का प्रवर आलंबन है—ध्यान। आवश्यकता है आत्म साधक ध्यान के साथ आहार संयम की साधना करें। डॉ० वरुण मुनिश्री ने साध्वीश्री की आगामी यात्रा की मंगलकामना की। उन्होंने कहा कि जब जैन विश्व भारती संस्थान से मैंने अध्ययन किया उस वक्त साध्वी मंगलप्रज्ञा जी वाइस चांसलर के रूप में संस्थान में नियोजित थीं। इस बार चेन्नई में इनका चातुर्मास भव्य और दिव्य रहा।

अभातेयुप के उपाध्यक्ष रमेश डागा ने साध्वीश्री एवं मुनिश्री के मिलन को जिनशासन प्रभावक बताया एवं शुभकामनाएँ दी। शिविर संयोजक सजनराज जैन ने कहा कि तेरापंथ के अनुशासन व्यवस्था, मर्यादा की आचार्य शिवमुनि कई बार उल्लेख किया करते हैं। मुनिश्री ने कहा कि महामना आचार्यश्री महाश्रमण जी के ईरोड में दो दिवसीय प्रवास के दौरान मिले प्रेम-सद्भावना को भूल नहीं सकता।

नैतिक शिक्षा एवं नशामुक्ति कार्यक्रम

पाली।

पुनायता रोड स्थित मधुरम विद्या मंदिर में मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' के सान्निध्य में स्कूल में नैतिक शिक्षा और नशामुक्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें मुनिश्री की प्रेरणा से विद्यार्थियों ने जीवन में नैतिकता के पथ पर चलने की प्रतिज्ञा के साथ आजीवन नशामुक्त रहने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि अनैतिकता के इस दौर में नैतिकता से जीवन-यापन करने वाले के सामने कठिनाइयाँ तो आ सकती हैं, लेकिन जो संकल्पवान होता है, वह कभी हार नहीं मानता। उन्होंने कहा कि सत्य को परेशान किया जा सकता है, किंतु परास्त नहीं।

मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि नैतिकता नहीं हो तो विद्या व्यर्थ है। नैतिकता इंसान की सबसे बड़ी निधि है और सबसे बड़ी ताकत। उन्होंने बताया कि रावण ताकतवर होकर भी राम-लक्ष्मण से हार गया और मारा गया, कारण उसमें नैतिकता का अभाव था।

कार्यक्रम के प्रारंभ में इचरजदेवी, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री दीपिका वैद, रश्मि बाफना, नीलम कुंडलिया, विमला ने अणुव्रत गीत का संगान किया। स्कूल संस्था प्रधान मानमल मनोज कुमार बाफना ने समागत अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन जैन युवा संगठन के अध्यक्ष राकेश कुंडलिया ने और आभार ज्ञापन स्कूल प्रधानाध्यापक दलपत सिंह ने किया।

इस अवसर पर भंवरलाल कुंडलिया, रोशनलाल बाफना, किशनलाल हिरण, मनीष बाफना, राधेश्याम मुंदड़ा, सूरजमल वेगानी, शिक्षक हिम्मत सिंह, रतन सिंह उपस्थित थे। तेरापंथ सभा की ओर से स्कूल प्रबंधकों का दुपट्टा पहनाकर व साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया।

तेरापंथ डिजिटल डायरेक्टरी, वृहद हैदराबाद का विमोचन

सिकंदराबाद।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ समाज वृहद हैदराबाद की डिजिटल डायरेक्टरी का शुभारंभ तेयुप के दीपावली स्नेह मिलन कार्यक्रम के दौरान क्लासिक गार्डन, सिकंदराबाद में किया गया। डिजिटल डायरेक्टरी का एप्प भी गूगल और एप्पल प्लेटफार्म पर शीघ्र उपलब्ध हो जाएगा।

तेरापंथ डिजिटल डायरेक्टरी वृहद हैदराबाद के मुख्य सौजन्य इंदरमणी देवी, अशोक श्रेयांस बरमेचा एवं अन्य सौजन्य बाबूलाल बैद, सुशील संचेती, मुकेश चोरड़िया, सुरेश सुराणा के द्वारा डिजिटल डायरेक्टरी का उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर डिजिटल डायरेक्टरी के मुख्य संयोजक संजय कुचेरिया एवं अन्य संयोजकगण सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

इस अवसर पर जिन्होंने अब तक अपने नाम रजिस्टर करवाए हैं, उनके लिए लक्की ड्रॉ भी रखा गया। राकेश धारीवाल इसके विजेता रहे।

महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस का आयोजन

बैंगलुरु।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में टी-दासरहल्ली, तेरापंथ भवन में अणुव्रत समिति, बैंगलुरु के तत्त्वावधान में 'महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस, जीवन विज्ञान दिवस के रूप में आयोजित किया गया।

शासनश्री साध्वी श्री द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात कन्या मंडल द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम् का संगान हुआ। शासनश्री साध्वीश्री कंचनप्रभा जी ने कहा कि विनय, समर्पण, श्रद्धा, अनुशासन के अनुपम आदर्श मुनि नथमल जी को आचार्य तुलसी ने 'महाप्रज्ञ अलंकरण' प्रदान किया, सम्मानित किया, अलंकृत किया। लगभग ४ माह पश्चात उनको युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया तथा उसी वक्त वे युवाचार्य महाप्रज्ञ नाम से नियुक्त हुए।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का नाम आते ही विनय और समर्पण मुखरित हो जाते हैं, इतने बड़े दार्शनिक आचार्य होते हुए भी आपमें जो विद्वता थी उसका कभी आपको अहंकार नहीं आया। साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी।

दासरहल्ली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष नवरत्न गांधी ने अपने विचार व्यक्त किए। जीवन-विज्ञान कर्नाटक के प्रभारी ललित आच्छा ने जीवन-विज्ञान की शुरुआत से अब तक की विस्तृत जानकारी दी। अणुव्रत समिति, बैंगलुरु के अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल ने स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही। कन्हैयालाल गांधी ने संचालन किया।

सुप्तशक्तियों का जागरण प्रेक्षाध्यान से

टी-दासरहल्ली।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोचार एवं प्रेक्षा प्रशिक्षिका तथा तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रेक्षा गीत के संगान से हुआ।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि बौद्धिक एवं भौतिक विकास यात्रा के अनेकानेक रूप आज विश्व मानव के समक्ष हैं। अति शीघ्र विध्वंसकारी हथियारों का निर्माण त्रासदी उत्पन्न कर रहा है। पक्ष-प्रतिपक्ष हर राष्ट्र में स्वयं की सुरक्षा का सावल उपस्थित होता ही रहता है। ऐसे वातावरण में आत्म-शान्ति व आत्म-सुरक्षा के लिए ऐसा ध्यान ही सुरक्षा कवच है। इस विकास यात्रा में हर समस्या का समाधान है।

साध्वीश्री ने आगे कहा कि प्रेक्षाध्यान साधना से सुप्त शक्तियों का जागरण, संवर्धन व संरक्षण होता है। प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका रेणु कोठारी व पूजा गुगलिया ने प्रेक्षाध्यान पद्धति के बारे में विस्तार से बताया तथा महाप्राण ध्वनि के साथ श्वास प्रेक्षा के प्रयोग करवाए।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान स्वयं से स्वयं की पहचान है। इस ध्यान योग से ही हम मंजिल तक पहुंच सकते हैं। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

सभा द्वारा प्रशिक्षिकाओं का अभिनंदन किया गया। सभा संस्थापक अध्यक्ष लादुलाल बाबेल, तेममं अध्यक्षा रेखा मेहर, तेयुप अध्यक्ष दिलीप पोखरना ने विचार रखे । इस अवसर पर तेरापंथ सभा ट्रस्ट परिवार, तेममं, तेयुप परिवार एवं दासरहल्ली व निकटतम क्षेत्रों से सकल जैन समाज के श्रावक-श्रविकाओं की उपस्थिति रही। संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

चातुर्मासिक एकाशन तप अभिनंदन

साहूकारपेट।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में पूजा वैद मूथा के चातुर्मासिक एकाशन तप की अनुमोदना की गई। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि जैन दर्शन में आत्मा केंद्रीय स्थान पर है। संपूर्ण साधना का एक मात्र आधार हमारी आत्मा है। समाधान की भाषा में कहा गया नकारात्मक सोच से बचने का प्रयास और अठारह पापों से आत्म-सुरक्षा करें। इन्हें छोड़ने की साधना करें।

साध्वीश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर का प्रायोगिक दर्शन हमें प्राप्त है। महावीर ने कहा कि आश्रव को कम करने, रोकने का संकल्प करें।

तप के साथ ज्ञान की यात्रा भी चलती रहे। साध्वीवृंद ने तप अनुमोदन गीत प्रस्तुत किया। तपस्विनी बहन की माँ, पट्टालम स्कूल की प्रशिक्षिका लता बहन ने पुत्री के तप के प्रति शुभकामना की। सभा के मंत्री अशोक खतंग ने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा द्वारा पूजा वैद मूथा एवं प्रवीण वैद मूथा का सम्मान किया गया।

✦ आवेश की स्थिति में निर्णय गलत होने की संभावना रहती है, अतः शांत अवस्था में ही चिंतनपूर्वक निर्णय करना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन

मंडिया।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में प्रथम वीतराग पथ कार्यशाला का आयोजन हुआ।

जिसमें सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक, विशेष उपस्थित अभातेयुप के सदस्य मुकेश गुगलिया, ललित मेहर व बड़ी संख्या में बच्चों, युवाओं, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं, श्रावक-श्राविकाओं की सहभागिता के साथ, जीवन जीने की दिशा को समझने हेतु एक सफल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

सर्वप्रथम साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र के संगान द्वारा कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण तेममं ने किया। विजय गीत का संगान तेयुप, मंडिया द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक ने किया। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष प्रवीण दक ने किया। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने वीतराग पथ क्या और क्यों के बारे में समझाया। बचपन से माता-पिता बच्चों को संयम के संस्कार दें। वे श्रमण बन सकें तो अच्छा है, नहीं तो अच्छा श्रावक अवश्य बने। सभी को सामायिक करने की प्रतिज्ञा लेने के लिए कहा।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि हम चाहे कितने ही बड़े स्टेट्स के साथ जी रहे हों, मगर जिंदगी का सुकून त्याग में ही मिलता है। धार्मिक संस्कार हमें मोह से निर्मोही बनाते हैं।

साध्वी मेरुप्रभा जी, साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक गीत द्वारा प्रस्तुति दी। तेयुप द्वारा 'सुख क्या है' विषय पर एक शॉर्ट वीडियो क्लिप दिखाई गई। अभातेयुप सदस्य मुकेश गुगलिया ने कहा कि वीतराग पथ कार्यशाला गुरु इंगित एक आयाम है। इस पथ पर चलते हुए हम सब संयम की ओर बढ़ सकते हैं। ललित मेहर ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा अध्यक्ष नरेंद्र दक ने भी अपनी भावना व्यक्त की। जैन पटके द्वारा विशिष्ट व्यक्तियों का सम्मान माणकचंद भंसाली, प्रकाश भंसाली द्वारा किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ श्रावक उगमराज आच्छा, चंदनमल, तेजराज भंसाली, सतीश, पारसमल गुंदेचा, बाबूलाल भटेवरा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्य जनों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री कमलेश गोखरू द्वारा किया गया। अध्यक्ष प्रवीण दक ने संचालन किया।

दीक्षार्थी मुमुक्षु मुदित जैन की शोभायात्रा एवं मंगलभावना समारोह

रोहिणी, दिल्ली।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में दीक्षार्थी मुमुक्षु मुदित जैन की शोभायात्रा एवं मंगलभावना समारोह का आयोजन रखा गया। तेरापंथी सभा, दिल्ली एवं रोहिणी सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में कार्यक्रम संपादित किया गया।

इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि साधना की दिशा में प्रस्थान का संकल्प विलक्षण चिंतन की फलश्रुति है। भैक्षव-शासन नंदनवन है, जहाँ सदैव कल्पवृक्ष हर व्यक्ति की आशा पूर्ण करते हैं।

साध्वीश्री जी ने कहा कि दुनिया की नजरों में दीक्षा स्वीकार करना कठिन है। आत्मबल के सहारे अध्यात्म की नौका से तुम्हें भव सागर तरना है। तेरापंथ की दीक्षा-समर्पण की दीक्षा है, मर्यादा और अनुशासन में रहने की परीक्षा है। एक गुरु की पावन सन्निधि में साधना के सौपान पर चढ़ मंजिल पाने का अवसर है।

साध्वी कांतयशा जी ने कहा कि मुदित शाश्वत आलोक हमारे भीतर है, तुम्हारा पुरुषार्थ उस आलोक को निश्चित प्राप्त करेगा तथा स्वयं का कल्याण कर तेरापंथ धर्मसंघ को गौरवान्वित करो, मंगलकामना।

साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक गुरु के अनुशासन एवं मर्यादा के परकोटे में रहकर नित नई एवं ऊँची सोच के द्वारा सफलता का स्पर्श कर रहा है।

इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी सहित साध्वियों ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ।

रोहिणी ज्ञानशाला के बच्चों ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से मुदित की वर्धापना की एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षक, पशिक्षिकाओं एवं कार्यकर्ताओं ने सुमधुर गीत का संगान कर मुदित के मंगल भविष्य की मंगलकामना की।

तेरापंथी सभा, रोहिणी के अध्यक्ष विजय जैन ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत कर मुदित को कहा कि बेटे, मुनि बन पुनः रोहिणी में आना और अपने ज्ञानामृत से हमारी चेतना को जागृत करना, हमें भूल ना जाना।

रोहिणी सभा के कोषाध्यक्ष पराग जैन, पश्चिम विहार सभाध्यक्ष सुशील जैन, पालम सभाध्यक्ष ईश्वर जैन, मॉटल टाउन सभाध्यक्ष प्रशन्न पुगलिया, दिल्ली सभा उपाध्यक्ष नत्थूराम जैन, तेममं अध्यक्षा मंजु जैन, तेयुप के अध्यक्ष विकास सुराणा, नागलोई सभाध्यक्ष श्रीश्रीपाल जैन सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने भाव व्यक्त किए।

कार्यक्रम के मुख्य नायक दीक्षार्थी मुदित ने पूरी सभा को आह्वान करते हुए ८ दिसंबर को सिरियारी जाने की प्रेरणा एक गीत के माध्यम से दी और सभी से जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए क्षमायाचना की।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा, दिल्ली के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया। उन्होंने मुदित की बार-बार अभ्यर्थना की और कहा कि यौवन की दहलीज पर खड़े मुदित तुमने जो सपना देखा और उसे चरितार्थ करने गुरुचरणों में जा रहे हो-वह इक्कीसवीं सदी का चमत्कार कहा जा सकता है, क्योंकि वैज्ञानिक युग में सुलभ भौतिक सुख-सुविधाओं को छोड़कर संन्यास जीवन में बढ़ रहे हो-तुम तेजस्विता प्राप्त कर लक्ष्य वारों, मंगलकामना।

'निर्माण उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यक्रम का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेमम के निर्देशानुसार 'निर्माण उम्मीद एक बेहतर कल की' परियोजना के अंतर्गत चिल्ड्रंस डे के उपलक्ष्य में आरआर नगर तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में गवर्नमेंट स्कूल में बच्चों को सिखाया की जीवन के हर एक पहलू में सदैव सच्चाई और भरोसेमंद होना शामिल है। ईमानदारी एक अच्छा गुण है जो व्यक्ति को जीवन में सफल होने और सम्मानप्राप्त करने में मदद करता है। इसी के साथ हमें अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छता से रखना चाहिए।

बच्चों को महाप्राण ध्वनि भी सिखाई गई और उसके फायदे बताए गए। चिल्ड्रंस डे के उपलक्ष्य में चाचा नेहरू के जीवन के बारे में जानकारी दी। बच्चों को गिफ्ट भी दिए गए। संयोजिका पूनम दक और दीपिका दक ने सहयोग दिया।

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(१११)

जिसके उपकारों से उपकृत दो सदियों की युगधारा।
वह साहस पौरुष का दरिया ऋणी रहेगा जग सारा।।

नए सृजन का स्वप्न सलोना जिसके नयनों में पलता
दीया उम्मीदों का उजला जिसके दिल में था जलता
आश्वासन की खिड़की खोली मूर्च्छित मानवता जागी
कदम बढ़े जिस ओर उधर ही एक कारवां था चलता
गीतों की महफिल मनभावन लिया हाथ में इकतारा।।

गति में था विश्वास श्वास सब अर्पित मंजिल को पाने
मंजिल से पैदा हो जातीं नई मंजिलें अनजाने
पतझर में ऋतुराज रचा प्राणों के पल्लव हरे-भरे
जन-जन के मुख पर मुखरित है जिसके अद्भुत अफसाने
वह अवतार दिव्यता का था चमका बनकर ध्रुवतारा।।

लिखे काल के विशद भाल पर जिसने नए-नए आलेख
किया समय ने उसके अवदानों का गरिमामय अभिषेक
चिंतन निर्णय और अमल में क्षम्य नहीं था कालक्षेप
हो जाते अभिभूत सुधीजन उसका पुष्कल वाङ्मय देख
यादों के सागर में गोते लगा रहा मन बंजारा।।

(११२)

कितने दिन हो गए आर्यवर! बार-बार स्मृतियों में आते।
दिन हो चाहे रात प्रात तुम औचक आकर मुझे जगाते।।

स्मृतियों के पन्नों पर अंकित पढ़ती मैं अपने अतीत को
कभी देख लेती हूँ रुककर जीवन की हर हार-जीत को
खड़े वहाँ पर भी मिल जाते कोई गीत-ग़ज़ल तुम गाते।।

थे करीब जितने तुम मेरे अब उतने ही दूर हो गए
रुका कौन-सा काम वहाँ जो जाने को मजबूर हो गए
कर देती सहयोग तुम्हारा यदि तुम पहले ही बतलाते।।

खता हुई क्या ऐसी मुझसे बिना बताए छोड़ गए तुम
रिश्तों की रेशम-सी डोरी पल भर में ही तोड़ गए तुम
क्या होता संकेत जरा-सा कर देते तुम जाते-जाते।।

पसरा था आँगन में पतझर तुमने ही मधुमास खिलाया
सूख रहे थे कंठ प्यास से बिन माँगे पीयूष पिलाया
अब इन प्राणों की पुकार को कहो क्यों नहीं तुम सुन पाते।।

(क्रमशः)

जय भिक्षु

जय महाश्रमण

तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु
की पुण्यस्थली सिरियारी में
तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता
आचार्यश्री महाश्रमण जी
के पावन पदार्पण पर
शत्–शत् वंदन – अभिनंदन

:: श्रद्धाप्रणत ::

केवलचंद रोहित मनन मांडोत
खिंवाड़ा – चेन्नई

जय जय ज्योति चरण

जय जय महाश्रमण

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के गादाणा – राणावास (राजस्थान)
पदार्पण पर शत्–शत् वंदन – अभिनंदन

महान गुरु के महान अनुग्रह हेतु सविनय कृतज्ञता

:: श्रद्धाप्रणत ::

अमरचंद धरमचंद लूंकड़
गादाणा – राणावास – चेन्नई

✦ तुम्हारे सुख-दुःख के जिम्मेवार तुम स्वयं हो। दूसरे तो निमित्त मात्र हैं। फिर उन पर आक्रोश क्यों करते हो?
—आचार्यश्री महाश्रमण

जय भिक्षु

जय महाश्रमण

मरूधर मित्र परिषद् मुम्बई सिरियारी ट्रस्ट आचार्यश्री भिक्षु की पुण्यस्थली सिरियारी में आगन्तुक श्रद्धालुओं की सुविधार्थ 'मरूधर भवन' का निर्माण कर सौभाग्य की अनुभूति कर रही है।

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के सिरियारी पदार्पण पर

सविनय वंदन—अभिवंदन

:: श्रद्धाप्रणत ::

मरूधर मित्र परिषद् मुम्बई सिरियारी ट्रस्ट

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु की जन्म स्थली 'कंटालिया' में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन पदार्पण पर सादर वंदन भाव भरा अभिनंदन

:: श्रद्धाप्रणत ::

आचार्य भिक्षु जन्म स्थली समिति, कंटालिया

नवनिर्मित भिक्षु द्वार

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सिरियारी पावन पदार्पण पर

स्व. श्रीमती सुन्दरबाई-स्व. पुखराजजी सोलंकी एवं स्व. श्री उदयलालजी सोलंकी की पुण्य स्मृति में सोलंकी परिवार द्वारा निर्मित भिक्षु द्वार का लोकार्पण

Siddhanth SHREYANS
Group of Surat

:: श्रद्धाप्रणत ::

श्रीमती लेहरीबाई-शांतिलाल, प्रिया-देवेन्द्रकुमार, टीना-महावीर हर्षिल, रिधम, ध्याना सोलंकी परिवार, गजपुर – सुरत

जय भिक्षु

विघ्न हरण मंगल करण,
स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओळखर सुमिरण करयां,
सरे अचिंत्या काम।।

जय महाश्रमण

युग प्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी
के सिरियारी पावन पदार्पण पर भाव भरा वंदन–अभिनंदन

: श्रद्धाप्रणत :

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा – सिरियारी

जय भिक्षु

जय महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमणजी के
सिरियारी पदार्पण पर
मामा भांजा परिवार
शत्–शत् वंदन करता है

: श्रद्धाप्रणत :

'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' पारसमल जी गादिया, संथारा साधिका 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' प्यारीदेवी गादिया
'शासनसेवी' श्री मांगीलाल-श्रीमती बिमलादेवी छाजेड़ की पुण्य स्मृति में
श्रीमती मुलीबाई, सुरेश, मोहन, अनिल धारीवाल
'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' श्रीमती झमकूदेवी-शांतीलाल, विनोद, कुणाल छाजेड़
डूंगर, इन्दर, जसवंत, कमल गादिया एवं संजय, मनीष, नवीन छाजेड़
सिरियारी–बैंगलोर (मामा भांजा परिवार)

संबोधि

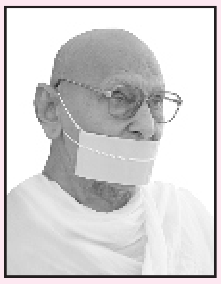

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(२) **यतं चरेद् यतं तिष्ठेत्, शयीतासीत वा यतम्।**
यतं भुञ्जीत भाषेत, साधकः प्रयतो भवेत्।।

भगवान् ने कहा–साधक संयमपूर्वक चले, संयमपूर्वक ठहरें, संयमपूर्वक सोएँ, संयमपूर्वक बैठें, संयमपूर्वक खाएँ और संयमपूर्वक बोलें। उसे प्रत्येक कार्य में संयत होना चाहिए।

यतना का अर्थ है–जागना। जो जागता है वह पाता है और जो सोता है वह खोता है। जागरूकता प्रत्येक क्रिया में सरसता भर देती है। असावधानी सरस जीवन को भी नीरस बना देती है। भगवान् महावीर ने साधक को सचेत करते हुए कहा है–'तुम समय मात्र भी प्रमाद मत करो।' प्रमाद जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है। हमारी लापरवाही हमारे लिए ही अभिषाप बनती है। कार्य को समय पर न करने से काल उसका रस पी जाता है। मनुष्य के लिए फिर अनुताप शेष रहता है।

(३) **जलमध्ये गता नौका, सर्वतो निष्परिस्रवा।**
गच्छन्ती वाऽपि तिष्ठन्ती, परिगृह्वाति नो जलम्।।

जल मध्य में खड़ी हुई नौका, जो सर्वथा छिद्ररहित हो, चाहे चले या खड़ी हो, जल को ग्रहण नहीं करती। उसमें जल नहीं भरता।

(४) **एवं जीवाकुले लोके, मुमुक्षुः संवृतास्रवः।**
गच्छन् वा नाम तिष्ठन् वा, तादत्ते पापकं मलम्।।

इसी प्रकार जिस साधक ने आस्रव का निरोध कर लिया, वह इस जीवाकुल लोक में रहता हुआ, चाहे चले या खड़े रहे, पाप-मल को ग्रहण नहीं करता।

जो साधक अशुभ प्रवृत्ति को छोड़ शुभ में प्रवृत्त हुआ है, उसका ध्येय है–प्रवृत्ति-मुक्त होना। प्रवृत्ति-मुक्त होने से पूर्व जो शरीरापेक्ष क्रिया करता है, वह कैसे पाप रहित हो, इसका उत्तर यहाँ दिया है। महावीर ने उसके लिए एक छोटा-सा सूत्र दिया है। वह है–यतना, जागरूकता, सचेतनता। यतना को धर्म-जननी कहा है–'जयणेव धम्म जननी'। यतना का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि आप जो क्रिया कर रहे हैं उसमें डूबे रहें। डूबने का अर्थ है–आपको अपना होश नहीं है। यतना अपने आपमें बहुत गहरी है। उसका अभिप्राय है–प्रत्येक क्रिया के साथ आपको अपनी स्मृति रहे। जैसे–मैं चल रहा हूँ, बैठ रहा हूँ, बोल रहा हूँ, लेट रहा हूँ, भोजन कर रहा हूँ, विचार कर रहा हूँ आदि-आदि। स्वयं की स्मृति सतत उजागर रहने से क्रिया में होने वाला प्रमाद स्वतः शांत होता चला जाएगा। साधक का आचार के प्रति इतना सचेतन होने की आवश्यकता नहीं है जितना कि स्व-स्मरण के प्रति है। कबीर ने कहा है–यह शरीर रूपी चादर सबको मिली है, किंतु प्रायः सभी मैली कर देते हैं। वे यतना (जतन) नहीं रखते 'दास कबीर जतन से ओढ़ी ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया'। मैंने उस चादर को बड़ी सावधानी से धारण किया अतः वैसी की वैसी छोड़ रहा हूँ। यह कठिन है इसलिए कि सावधानी नहीं है। सावधानी साधना के क्षेत्र में प्रवेश का प्रथम चरण है। पाप कर्म का प्रवेश जागरूकता में संभव नहीं है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

शील धर्म

प्रश्न २४ : ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए मुनि को कौन से उपाय सुझाए गए हैं?

उत्तर : ब्रह्मचर्य की रक्षा के उपायों को आगमों में गुप्तियाँ अथवा समाधि-स्थल कहा है। इन्हें साधारणतः ब्रह्मचर्य की बाड़ भी कहा जाता है। इन उपायों की संख्या नौ अथवा दस दोनों ही प्राप्त हैं। इनकी नौ संख्या इस प्रकार हैं–

(१) विविक्त शयनासन – निर्ग्रंथ स्त्री, पशु और नपुंसक से संयुक्त उपाश्रय का सेवन न करें।
(२) स्त्री कथा-वर्जन – स्त्री कथा न कहे।
(३) एक आसन-वर्जन – स्त्रियों के साथ एक आसन पर न बैठें।
(४) इंद्रिय दर्शन-परिहार – स्त्रियों के मनोरम और मनोहर अंग-प्रत्यंगों को न देखें।
(५) शब्द श्रवण-परिहार – स्त्रियों के कूजन, गीत, हास्य आदि के शब्द न सुनें।
(६) पूर्व-क्रीड़ा-स्मृति-वर्जन – पूर्व क्रीड़ाओं का स्मरण न करें।
(७) प्रणीत-भोजन-वर्जन – सरस भोजन न करें।
(८) अति भोजन-वर्जन – अति मात्रा में न खाएँ व न पीएँ।
(९) विभूषा-वर्जन – विभूषा न करें।

ब्रह्मचर्य की जो पाँच भावनाओं–अनुप्रेक्षाओं का उल्लेखआता है, उनका इन नौ गुप्तियों में समावेश हो जाता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग – एक)

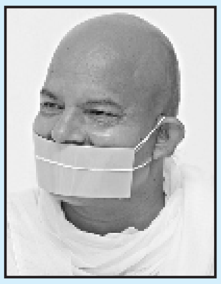

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

मुनि मघराजजी विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। वे सतत अप्रमत्त और स्थिरयोगी थे। उनकी बुद्धि इतनी प्रखर थी कि एक बार कंठस्थ किए हुए ग्रंथ को वे प्रायः भूलते नहीं थे। उनका हृदय बालक की तरह सरल था। तेरापंथ में संस्कृत के वे प्रथम पंडित कहे जाते थे। साधुओं में भी वे सबके प्रिय और विश्वासपात्र थे। एक बार का प्रसंग है–किसी बालमुनि से कोई गलती हो गई। मामला पंचों (आचार्य द्वारा नियुक्त पाँच साधु) के पास गया। जब निर्णय सुनाया जाने वाला था तब बालमुनि ने जयाचार्य से प्रार्थना की कि मुझे निष्पक्ष न्याय मिल सकेगा, ऐसी आशा नहीं है। जयाचार्य ने पूछा–'तुझे किस पर विश्वास है? क्या तुझे मघजी का निर्णय मान्य है?' उस साधु ने तत्काल स्वीकृति दे दी। उसी दिन से जयाचार्य ने मुनि मघराजजी को पाँच पंचों के ऊपर 'श्रीपंच' नियुक्त कर दिया। उस समय मघवागणी की अवस्था मात्र चौदह वर्ष की थी।

मुनि मघराजजी की विरल विशेषताओं से प्रभावित होकर श्रीमज्जयाचार्य ने वि०सं० १९२० में उनकी युवाचार्य पद पर नियुक्ति की। उस समय उनकी आयु चौबीस वर्ष की थी। मघवागणी अठारह वर्ष तक युवाचार्य पद पर रहे। युवाचार्य अवस्था में उन्होंने धर्मसंघ के कई गुरुतर कार्य संभालकर जयाचार्य को निश्चिंत बना दिया था। वि०सं० १९३८ में जयाचार्य का स्वर्गवास होने के पश्चात् उन्होंने जयपुर में तेरापंथ का शासन-भार संभाला। मघवागणी कोमल प्रकृति के आचार्य थे। वे किसी को कड़ा उलाहना नहीं देते थे। किसी की गलती होने पर मधुर शब्दों में कहा करते–'तुम गलती करते हो, तब मुझे कहना पड़ता है।' धर्मसंघ के संचालन में मघवागणी की कोमल अनुशासना सामूहिक जीवन में अहिंसा का अभिनव प्रयोग था।

उनके शासनकाल में एक सौ उन्नीस दीक्षाएँ हुई। उनमें छत्तीस साधु और तिरासी साध्वियाँ थीं। मघवागणी का स्वर्गवास वि०सं० १९४९ चैत्र कृष्णा पंचमी के दिन सरदारशहर में हुआ।

आचार्य माणकगणी

माणकगणी तेरापंथ के छठें आचार्य थे। उनका जन्म वि०सं० १९१२ भाद्रपद कृष्णा चतुर्थी को जयपुर नगर के जौहरी परिवार में हुआ। उनका गौत्र खारड़ था और जाति श्रीमाल थी। उनके पिता का नाम हुकमीचंदजी एवं माता का नाम छोटांजी था। उनके बाबा का नाम लिछमनदासजी (लक्ष्मणदासजी) था।

माणकगणी को पिता का वात्सल्य एवं माता की ममता अधिक समय तक प्राप्त नहीं हो सकी। उनकी शैशव अवस्था में ही माता-पिता दोनों का देहावसान हो गया। लाला लिछमनदासजी ने अत्यंत स्नेह के साथ बालक माणक का पालन-पोषण किया एवं उसे धार्मिक संस्कारों से संस्कारित किया। बालक माणक भी अपने बाबा के प्रति अत्यंत विनम्र था एवं उनके प्रति विशेष आदर-भाव रखता था।

वि०सं० १९२८ का चातुर्मास जयाचार्य ने जयपुर किया। उस चातुर्मास में बालक माणक को वैराग्य हुआ। बालक ने तत्त्वज्ञान सीखा और स्वयं को साधना के लिए तैयार कर लिया। वि०सं० १९२८ फाल्गुन शुक्ला एकादशी को जयाचार्य द्वारा लाडनूं में माणकगणी का दीक्षा-संस्कार संपन्न हुआ। उस समय उनकी आयु साढ़े सोलह वर्ष की थी।

माणकगणी प्रकृति से विनम्र थे। उनकी बुद्धि तीक्ष्ण थी। वे हर बात को बड़ी शीघ्रता से ग्रहण कर लेते थे। दीक्षा लेने के बाद कुछ ही वर्षों में उन्होंने आगमों का गंभीर और तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया। उनकी विशेषताओं से प्रभावित होकर जयाचार्य ने उन्हें दीक्षा के तीन वर्ष बाद ही अग्रणी बना दिया।

जयाचार्य के स्वर्गवास के पश्चात् मघवागणी की अनुशासना में उन्होंने अपने जीवन का विकास किया। वि०सं० १९४९ चैत्र कृष्णा द्वितीया को मघवागणी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। युवाचार्य-अवस्था में रहने का उन्हें केवल चार दिन का ही अवसर मिला। वि०सं० १९४९ चैत्र कृष्णा अष्टमी को सरदारशहर में वे आचार्य पद पर आसीन हुए।

(क्रमशः)

✦ *अच्छी चीज कहीं से भी मिले, स्वीकार करनी चाहिए। बुरी चीज कहीं भी हो उसका परित्याग करना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मंगलभावना समारोह के आयोजन

सेलम

तेरापंथ सभा, सेलम के तत्त्वावधान में साध्वी लावण्यश्री जी के चातुर्मासिक परिसंपन्नता के उपलक्ष्य में मंगलभावना समारोह का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि गुरु आज्ञा से हमने सेलम में चातुर्मास किया। आज सेलमवासी धर्म के प्रति जागरूक हैं, वह आगे भी बढते रहें। सभी संघ और संघपति की सेवा-आराधना करते रहें।

साध्वी सिद्धांतश्री जी एवं साध्वी दर्शितप्रभा जी ने केजीएफ के सेलम विहार तक की यात्रा को एवं चार माह में जितनी भी तपस्या हुई उसके बारे में बताया और सभी श्रावकों का आभार व्यक्त किया।

पुष्पा बाफना एवं कंचन सेठिया ने गीतिका की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने प्याज, बेंगन, लोकी, फ्रेंच फ्राइज, चोकलेट एवं आइस्क्रीम की ड्रेस पहनकर उनके गुण और अवगुण बताए एवं बच्चों ने गीतिका के माध्यम से साध्वीश्री जी का अभिवादन किया। महिला मंडल ने गीतिका एवं नाटक द्वारा प्रस्तुति दी।

तेरापंथ सभाध्यक्ष राजेश भंसाली, ट्रस्ट बोर्ड के प्रबंध न्यासी विरेंद्र सेठिया, तेयुप अध्यक्ष तरुण दाँती, केवलचंद बोहरा, सरदारमल नाहर इत्यादि ने अपने-अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

टी-दासरहल्ली

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने मंगलभावना समारोह में कहा कि चातुर्मास में प्रकृति धरती माता को हरी-भरी कर देती है, उसी प्रकार धर्म आराधना करने वालों के लिए चातुर्मास बहार लेकर आता है। क्योंकि साधु-साध्वियाँ चार माह के लिए एक क्षेत्र में प्रवास के लिए प्रतिबद्ध हो जाते हैं, यह प्रभु महावीर की देशना है। इसमें श्रावक समाज चारित्रात्माओं के सान्निध्य में उनके श्रीमुख से आगम वाणी सुनकर विशेष मोक्ष मार्ग आराधना से स्वयं को समर्पित करता है।

साध्वीश्री ने आगे कहा टी-दासरहल्ली का यह प्रथम चातुर्मास है जिसमें गुरु कृपा से धर्म गंगा प्रवाहित हुई है।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि तेरापंथ सभा, तेयुप एवं तेमम के पारस्परिक सौहार्द भाव, संगठन के प्रति सजगता तथा विनय समर्पण के साथ गुरुभक्ति, शासनभक्ति ने धर्म आराधना में कीर्तिमान बनाया है। इसीलिए चातुर्मास विशेष उपलब्धियों के साथ संपन्न हुआ। ऐसी धर्म आराधना आगे भी होती रहे। साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान किया।

कार्यक्रम का आगाज शासनश्री साध्वीश्री के मंगलमंत्रोच्चार से हुआ, तेमम द्वारा मंगलाचरण हुआ, सभा अध्यक्ष नवरतन गाँधी ने सभी का स्वागत किया। तेयुप एवं कन्या मंडल द्वारा गीतिका का संगान हुआ। सभा परिवार से उपाध्यक्ष लोकेश बोहरा, विनोद मेहर, सहमंत्री सुरेन्द्र मेहर, कोषाध्यक्ष प्रकाश गाँधी, सभा पूर्व मंत्री कन्हैयालाल गाँधी, तेमम से अध्यक्षा रेखा मेहर सहित अनेक जनों ने साध्वीवृंद के प्रति मंगलभावना संप्रेषित की। सभा द्वारा सभी के प्रति आभार व्यक्त किया गया। संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

उदासर

तेरापंथ भवन, उदासर में रात्रि में साध्वी शशिरेखा जी का मंगलभावना समारोह रखा गया, जिसमें साध्वीश्री जी ने कहा कि उदासर क्षेत्र धर्म व तप के साथ साताकारी है। यहाँ साधु-साध्वियों का निरंतर प्रवास रहता है, इसलिए धार्मिकता बनी रहती है।

तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्यश्री महाश्रमण जी की आज्ञानुसार ही विहार होता है। साध्वी शशिरेखा जी यहाँ से विहार करके बीकानेर, गंगाशहर होते हुए नाल जाएँगे।

मंगल भावना समारोह में महिला मंडल, कन्या मंडल ने विदाई गीत गाए। खचाखच भरे भवन में सभी ने साध्वीश्री के प्रति उद्‌गार व्यक्त किए व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ व्यक्त की।

बैंगलोर

तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर में मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में ऐतिहासिक सफलतम चातुर्मास के आखरी दिन मंगलभावना समारोह का आयोजन हुआ।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने एक सूत्र दिया–चरैवेति-चरैवेति। भारतीय संस्कृति में अभिनंदन और विदाई दोनों का बड़ा महत्त्व रहा है, जिसका आगमन होता है उसकी एक दिन विदाई भी होती है। साधु और पानी दोनों को चलते रहना चाहिए, क्योंकि बहता पानी निर्मल होता है और गतिमान साधु का जीवन उज्ज्वल होता है। आपको हमें विदाई नहीं देनी है, विदाई देनी है अपने अवगुणों को अपनी बुराइयों को।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि बैंगलोर का चातुर्मास बना मुनिश्री के श्रम से खास, हमें है विश्वास बैंगलुरु में निरंतर महकेगी धर्म-ध्यान की सुवास। बाल संत मुनि जयदीप कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

सांसद पीसी मोहन ने कहा कि मुनिश्री के दर्शन कर कृतार्थ हुआ। जैन धर्म से मैं हमेशा प्रभावित हूँ।

मागड़ी विधायक ए० मंजूनाथ और पूर्व पुलिस कमिश्नर भास्कर राव ने मुनिश्री से प्रेरणा प्राप्त की और अपने विचार व्यक्त किए। प्रेक्षा संगीत सुधा, प्रज्ञा संगीत सुधा एवं ज्ञानशाला ने प्रस्तुति दी। महासभा से प्रकाशचंद लोढ़ा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्ण माला पोखरना, तेयुप अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, टीपीएफ अध्यक्ष हितेश गीड़िया सहित अनेक पदाधिकारी एवं गणमान्य सदस्य तथा श्रावक समाज ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए मंगलभावना व्यक्त की। संचालन मंत्री गौतम मांडोत ने किया।

चेन्नई

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी का मंगलभावना समारोह मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि भावनाओं का अमृत कल्याणकारी होता है। सभी के जीवन में धर्म का मंगलभाव बना रहे। अहिंसा, संयम, तप रूपी आनंद की मंगलमय धारा हर जीवन में प्रवाहित होती रहे। गुरु की कृपा और गुरु पावर हाउस से हर कार्य मंगलकारी होते हैं।

साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ सभा के पूर्व अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया और वर्तमान में अध्यक्ष उगमराज सांड एवं सभी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य पूर्ण समर्पित दायित्व एवं इंगित आराधना के प्रति सजग हैं।

साध्वीश्री जी ने कहा कि यह तेरापंथ भवन भी तीन गुरुओं के चरण स्पर्श पाकर धन्य बना हुआ है। इसकी गरिमा सदैव बनी रहे। सभी क्षेत्रों के लोगों ने चातुर्मास का अच्छा लाभ उठाया। आज यहाँ से गुरुनिर्देशानुसार सानंद चातुर्मास संपन्न कर हम प्रस्थित हो रहे हैं। संपूर्ण श्रावक समाज ने आध्यात्मिक मंगलकामना, शुभकामना की सौगात हमें दी है। हम चाहते हैं अध्यात्म साधना की गंगा में सभी अभिस्नात होते रहें। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की तेजस्विता से भावित होकर आगे बढ़ते रहें।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी, साध्वी शौर्यप्रभा जी ने 'अच्छा! तो हम चलते हैं' कार्यक्रम प्रस्तुत किया। महिला मंडल के मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलभावना समारोह में अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने लघु नाटिका के द्वारा भाव व्यक्त किए। कन्या मंडल ने 'नासा सेंटर' कार्यक्रम प्रस्तुत किया। प्रवीण बैदमूथा एवं जय तुलसी संगीत मंडल की ओर से हेमंत डूंगरवाल ने भाव रखे।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के संगठन मंत्री अलंकार आच्छा ने किया।

दक्षिण मुंबई

शासनश्री साध्वी सोमलता जी, साध्वी शकुंतला कुमारी जी, साध्वी संचितयशा जी, साध्वी जागृतप्रभा जी व साध्वी रक्षितयशा जी के प्रति मंगलकामना व्यक्त की गई।

कार्यक्रम में महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन के कार्यकर्ता कुंदनमल धाकड़, उपाध्यक्ष रमेश मेहता, महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल चेयरमैन एस०के० जैन, तेयुप के अध्यक्ष नीतेश धाकड़, मंत्री रौनक धाकड़, अणुव्रत क्षेत्रीय संयोजक किशन राठौड़ सहित अनेक पदाधिकारी एवं सदस्यों ने विचार व्यक्त किए।

ज्ञानशाला की संयोजिका राजश्री कच्छारा ने अपनी टीम के साथ व महिला मंडल संयोजिका, सह-संयोजिका रेखा धाकड़, वनिता धाकड़, सविता कच्छारा, सौरभ बरमेचा, प्रीति डागलिया, संगीता राठौड़ ने गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी रक्षितयशा जी ने साध्वीवृंद से अपनी तरफ से क्षमायाचना की। शासनश्री साध्वी सोमलता जी ने कहा कि हम दक्षिण मुंबई में जितने उत्साह से आए उससे दुगुने उत्साह, प्रसन्नता से मंगल बधाई ले रहे हैं। आप लोगों की सहजता, सरलता, विनम्रता, श्रद्धा भाव उत्तरोत्तर वर्धमान होती रहे। २०२३ में पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास में आप आध्यात्मिक चेतना को जागृत करें। सबसे आपश्री ने क्षमायाचना की। आभार ज्ञापन तेयुप के मंत्री रौनक धाकड़ व कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया।

अमरनगर, जोधपुर

तेरापंथी सभा सरदारपुरा द्वारा शासनश्री सत्यवती जी के सान्निध्य में मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला ने अपना वक्तव्य दिया। महिला मंडल अध्यक्ष सरिता कांकरिया, तेयुप सरदारपुरा अध्यक्ष महावीर चौधरी, पूर्व सभा अध्यक्ष माणक तातेड़, टीपीएफ अध्यक्ष नरेश सिंघवी, ज्ञानशाला संयोजक बीआर जैन, अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सरिता तातेड़, महासभा कार्यसमिति सदस्य मर्यादा कुमार कोठारी, महिला मंडल मंत्री चंद्रा जीरावला ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

शासनश्री साध्वीश्री ने कहा कि मंगलभावना का यह कार्यक्रम श्रावक समाज का कार्यक्रम है। यहाँ का श्रावक समाज जागरूक है। नियमित धर्म आराधना व दर्शन की भावना रहती है। सभी का आध्यात्मिक विकास होता रहे। यही मंगलकामना है। श्रावक समाज के प्रति खमतखामणा। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री महावीर चोपड़ा ने किया।

कोटा

साध्वी अणिमाश्री जी के कोटा के सफलतम चातुर्मास की परिसंपन्नता पर श्रावक समाज की ओर से मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज मैं सर्वप्रथम पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, भावना का अर्ध्य समर्पित कर रही हूँ। आपश्री की कृपादृष्टि से हमारा कोटा प्रवास आनंददायी, सुखदायी एवं वरदाई रहा। कोटा का श्रावक समाज श्रद्धाशील, विनयशील एवं श्रमशील है। गण एवं गणपति के प्रति निष्ठावान है। हमारे प्रवास का अच्छा लाभ उठाया है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि कोटा समाज का हर व्यक्ति अपने गुणों की सुवास से सबको सुवासित करता रहे। प्रेम व समता की कंघी लेकर घर-परिवार व समाज की समस्याओं को सुलझाता रहे। साध्वीश्री ने अनेक व्यक्तियों का नामोल्लेख करते हुए उनकी सेवाओं का अंकन किया और कहा कि नाम लिया वो हमारे दिमाग में हैं एवं जिनका नाम नहीं लिया वो हमारे दिल में हैं। सब अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए धर्मसंघ की गौरव वृद्धि करते रहें।

साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी ने कहा कि साध्वी अणिमाश्री जी ने गुरुकृपा से अपने श्रम की स्याही से कोटा की पोथी में सृजन के स्वस्तिक उकेरे ही अपने करिश्माई कर्तृत्व के नए पद चिह्न अंकित किए हैं।

तेरापंथी सभाध्यक्ष संजय बोथरा, संगठन मंत्री मनोज जैन, पूर्व अध्यक्ष रतनलाल जैन, अणुव्रत समिति मंत्री भूपेंद्र बरड़िया, उपाध्यक्ष रवि बुच्चा, तेयुप अध्यक्ष आनंद दुगड़, मंत्री कमलेश जैन, महिला मंडल अध्यक्षा उषा बाफना सहित अनेक पदाधिकारियों सदस्यों ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

रेखा बोथरा, रचना सेठिया, हेमलता जैन, कुसुम बैद, सुप्रिया हीरावत आदि बहनों ने 'पपेट शो' की प्रस्तुति दी। स्टेशन क्षेत्र की बहनों ने एवं महिला मंडल ने विदाई गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री धर्मचंद जैन ने किया।

✦ *आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

चौदह पूर्वों का सार है महामंत्र नवकार

रोहिणी, दिल्ली।

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में 'नमस्कार महामंत्र डेकोरेशन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। चौदह कन्याओं ने इसमें अपनी सहभागिता दर्ज की। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि नमस्कार महामंत्र जिसमें महान आत्माओं के गुणों का उत्कीर्ण किया गया है। ३५ अक्षरों का यह मंत्र अचित्य है एवं इसमें चौदह पूर्वों का सार है। मन की स्थिरता, रंगों एवं स्थान विशेष के साथ किया गया जाप अत्यंत प्रभावी है। लगातार एक वर्ष तक इसकी अभ्यर्थना करने पर आनंद को साकार किया जा सकता है। आधि-व्याधि एवं उपाधि को दूर कर समाधी में समाधिस्थ हो सकते हैं।

प्रतियोगी बहनों का परिणाम निर्णायक मंडल द्वारा निकाला गया। निर्णायक मंडल में तेरापंथी सभा, रोहिणी अध्यक्ष विजय जैन, पवन जैन, बिरदी चंद जैन, अशोक जैन उपासक, निगम पार्षद कनिका जैन ने परिणाम की घोषणा की। प्रथम स्थान पर दस वर्षीय परी जैन व प्रांशी जैन बड़ों में ऐंजल जैन, काजल गुप्ता, द्वितीय स्थान पर प्रिया सिंधी, तवी दुधोड़िया एवं तीसरे स्थान पर जिया जैन, समिता बोथरा रही। इसके अतिरिक्त सुलक्षणा डागा, वाणी जैन, महक सुराणा, पूजा जैन और विमला जैन को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। तेरापंथी सभा, रोहिणी ने सभी बच्चों का उत्साहवर्धन किया। साध्वी कल्याणयशा जी ने गीत का संगान कर नमस्कार महामंत्र की महत्ता पर प्रकाश डाला।

पुरस्कार वितरण दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष नत्थूराम जैन, रोहिणी सभा के सहमंत्री सुशील जैन, रोहिणी ज्ञानशाला के महेंद्र चोरड़िया, वरिष्ठ श्रावक राजकुमार जैन, पवन जैन, जय कुमार जैन, विनोद कुमार जैन, ओम प्रकाश जैन एवं कमल बैंगाणी उपस्थित थे।

दादा-दादी कार्यशाला का आयोजन

साहूकारपेट।

तेरापंथ सभा, चेन्नई द्वारा साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में 'दादा-दादी शिविर' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ जय तुलसी मंडल के मधुर संगायक हेमंत डूंगरवाल के संगान से हुआ। तेरापंथ सभा अध्यक्ष उगमराज सांड ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आज चिंतन करना है, इस ढलती वय में जीवन कैसे जीएँ? यह सच्चाई है जीवन पल-पल कम होता जा रहा है। इस मोड़ पर जीवन की दिशा को बदलें, दशा स्वयं बदल जाएगी। साध्वीश्री जी ने कहा कि उम्र के इस पड़ाव में निर्मलता और पवित्रता रहे। विचारों में नकारात्मक भाव न आए। अधिक से अधिक भीतर रहने का प्रयास करें।

दादा-दादी शिविर के संयोजक संपतराज चोरड़िया ने विचार व्यक्त करते हुए साध्वीश्री जी के प्रति आभार व्यक्त किया। स्थानकवासी संप्रदाय से समागत, समाज सेवी प्रेमलता मेहता ने कहा कि बुजुर्ग हमारे परम उपकारी हैं, उन्हें उपहार समझें, भार नहीं। उनका दिल बच्चे की तरह कोमल होता है। साध्वी सिद्धियशा जी ने कहा कि दादा-दादी के अनुभव और उनकी दुआएँ हमारा मार्ग प्रशस्त करती हैं।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री अशोक खतंग ने किया। तेरापंथ सभा के सहमंत्री मनोज गादिया ने आभार जताया। मुख्य अतिथि प्रेमलता मेहता का तेरापंथ सभा द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में महासभा सदस्य ज्ञानचंद आंचलिया, जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष पुखराज बड़ोला, तेरापंथ पब्लिक, माधावरम् के अध्यक्ष तनसुख नाहर, तेरापंथ ट्रस्ट मंत्री राजेंद्र भंडारी, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण की उपस्थिति रही।

जीवन निर्माण में उपयोगीज्ञानशाला

कोयंबटूर।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी द्वारा मंगलपाठ से उद्घाटन सत्र प्रारंभ हुआ।

ज्ञानशाला दिवस के प्रथम सत्र में साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने स्मरण शक्ति का विकास कैसे हो इस पर ध्यान, जप, प्रयोग करवाए। यौगिक क्रियाएँ, कायोत्सर्ग आदि का प्रयोग प्रशिक्षिका रूप कला भंडारी द्वारा किया गया। मुख्य प्रशिक्षिका सविता भंडारी ने प्रेरणा से भरी कहानी सुनाई। प्रशिक्षिका कनकप्रभा बुच्चा ने ज्ञानार्थियों से मनोरंजक प्रश्न पूछे।

दूसरे सत्र में ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला गीत से मंगलाचरण किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने प्रेरक लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने कहा कि ज्ञानशाला में जो सीखते हैं वह जीवन भर नहीं भूलते और प्रशिक्षिकाएँ भी ज्ञान देने में, दायित्व में जागरूकता बरतें।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि जहाँ उच्च संस्कारों की बात आती है वहाँ बदला नहीं बदलाव की बात आती है। ज्ञानशाला में क्षमा की बात सिखाई जाती है।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष उत्तमचंद पुगलिया ने अपने विचार व्यक्त किए। गत वर्ष का विवरण संयोजिका स्नेहलता नाहटा ने दिया। विभिन्न प्रतिभागियों, शिशु संस्कार बोध में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुरेखा सेमलानी ने किया। कार्यक्रम का संयोजन मुख्य प्रशिक्षिका सविता भंडारी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन दीपिका बोथरा ने किया।

तप से जागृत होती है भीतर की शक्ति

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मुनि कुमुद कुमार जी की प्रेरणा से तेरापंथ सभा द्वारा सामूहिक एकासन जप अनुष्ठान आराधना हुई। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि कांटाबाजी में आज दूसरी बार सामूहिक एकासन आराधना हुई। जप-तप आराधना निर्जरा के लिए की जाती है। निर्जरा होने से कर्मों से मुक्ति मिलती है। कर्म मुक्ति ही संसार से मुक्ति है। भारतीय संस्कृति में सदियों से ऋषि-मुनियों ने तपस्या, साधना कर संसार मुक्ति का जीवंत संदेश दिया। कुमुद मुनिश्री ने अथक परिश्रम कर श्रावक समाज को सामूहिक एकासन के लिए प्रेरित किया। कर्म निर्जरा में सहभागी बने हैं।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि तप करना कठिन होता है, क्योंकि आहार संज्ञा प्राणी की मौलिक मनोवृत्ति होती है। जन्म से लेकर मरण तक व्यक्ति संसारी गतिविधियों में लिप्त रहता है। धार्मिकता की भावना होने से ही जीवन में परिवर्तन आता है।

३०० से अधिक एकासन हुए। सभा मंत्री सुमित जैन ने मुनिद्वय, प्रायोजक कवाड परिवार का आभार व्यक्त किया। मुनिश्री के साथ साधक सामूहिक अनुष्ठान में सहभागी बनें। सामूहिक रूप से एकासन का प्रत्याख्यान मुनिश्री द्वारा करवाया गया।

विशेष अनुष्ठान-शपथ ग्रहण समारोह

रायपुर।

तेरापंथ अमोलक भवन, रायपुर में समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में दीपावली पर्व पर विशेष अनुष्ठान जप का आयोजन किया गया। समणीवृंद ने दीपावली का जैन धर्म में महत्त्व को समझाते हुए तपमय मनाने की प्रेरणा दी।

अनुष्ठान के साथ ही टीपीएफ, रायपुर के नव मनोनीत अध्यक्ष तरुण नाहर ने अपनी कार्यसमिति के साथ शपथ ग्रहण की। साथ ही टीपीएफ की गतिविधियों की जानकारी दी। आयोजन में पूर्व जज गौतम चोरड़िया, सुनील जैन, बसंत गोयल, वीरेंद्र डागा ने अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त की।

पूर्व जज गौतम चोरड़िया का अभिनंदन तेरापंथी सभा की ओर से नवरतन डागा ने किया। संचालन कलश नाहर व आभार अरुण सिपानी द्वारा किया गया।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला

कोलकाता।

वृहद कोलकाता और दक्षिण बंगाल में कोलकाता सभा के तत्त्वावधान में महासभा के भिक्षु ग्रंथागार में रिफ्रेशर कोर्स का आयोजन हुआ। वृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल के लगभग सभी क्षेत्र की प्रशिक्षिकाएँ उपस्थित थी। लगभग ६० बहनें एवं विभिन्न क्षेत्र के अध्यक्ष कोलकाता सभा के अजय भंसाली, टॉलीगंज के अशोक पारक, लिलुआ के प्रमिल बाफना, उत्तरपाड़ा के नवरत्नमल मालू, पूर्वांचल, हावड़ा, लिलुआ के मंत्री भी उपस्थित थे।

उपासक डालमचंद नौलखा ने नमस्कार महामंत्र का संगान किया। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ एवं सोहन भाई के प्रति आभार व्यक्त किया। ज्ञालशाला प्रकोष्ठ के अनेक ट्रेनरों ने इसमें प्रशिक्षण दिया। अंत में सार्टिफिकेट वितरण के साथ अतिथियों, ट्रेनरों और प्रशिक्षिकाओं का सम्मान किया गया।

सभी के सहयोग से कार्यक्रम सुचारु रूप से संपन्न हुआ। प्रकाश दुगड़, पूजा पारख, निर्मला को बहुत-बहुत साधुवाद।

आजीवन संगीत रोलिंग शील्ड प्रतियोगिता

चेन्नई।

तेरापंथी सभा भवन, साहूकारपेट में 'श्री बालचंद केशरीचंद भटेवरा आजीवन संगीत रोलिंग शील्ड प्रतियोगिता' का आयोजन साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में हुआ। जिसमें काफी सदस्यों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर पूजा वैदमूथा, द्वितीय स्थान पर प्रवीण वैदमूथा एवं तृतीय स्थान पर प्रीति मूथा रही। इस आयोजन में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष उगमराज सांड, मंत्री अशोक कुमार खतंग एवं सहमंत्री देवीलाल हिरण की उपस्थिति रही।

प्रतियोगिता में सभी ने अच्छी संगीतमय प्रस्तुति दी। साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के अंत में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने सभी के प्रति मंगलकामना करते हुए मंगलपाठ सुनाया।

कर्नाटक राज्य स्थापना दिवस

टी-दासरहल्ली।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि भारत की आध्यात्मिक संस्कृति पर सभी को गौरव की अनुभूति होती है। यहाँ सभी धर्मों के ऋषि-महर्षि संयम, सौहार्द व सद्भावना का उपदेश देते हैं।

इस अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भी कव्वाली की प्रस्तुति दी गई। प्रसंगवश साध्वीश्री जी ने कहा कि आज कर्नाटक राज्य स्थापना दिवस है। हम भी मंगलकामना करते हैं कि कर्नाटक की धरा पर सदाचार, सद्भावना व सौहार्द का भाव सदा बढ़ता रहे।

तेरापंथ अध्यक्ष नवरतन गाँधी, पूर्व अध्यक्ष लादूलाल बाबेल, मंत्री प्रवीण बोहरा, पूर्व मंत्री कन्हैयालाल गाँधी, महिला मंडल से नेहा चावत, हंसा बाबेल, बावपृथक से राजेश मेहता, सुरेश, कमलेश ने भाव व्यक्त किए।

चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में गुरुदेव तुलसी के १०९वाँ जन्म दिवस के अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ स्कूल से बच्चों ने चित्रकला में भाग लिया। जिसका विषय था—नशामुक्ति, पर्यावरण सुरक्षा, बेटी बचाओ, जिसमें सभी बच्चों ने उत्साह से भाग लिया।

मुमुक्षु मुदित का मंगलभावना समारोह

दिवेर।

मुनि संजय कुमार जी के सान्निध्य में मुमुक्षु मुदित जैन, दिल्ली का मंगलभावना समारोह आयोजित किया गया। मुनि संजय कुमार जी ने कहा कि आत्महित के लिए हमें प्रयत्न करना चाहिए, हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमें महान गुरु मिले। व्यक्ति को सामुदायिक चेतना का विकास करना चाहिए अपने स्वार्थ और सुविधाओं को छोड़ना चाहिए। दीक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने उच्च आदर्श को प्राप्त कर सकता है। मुमुक्षु मुदित अब मुनि बनने जा रहा है। सेवा, समर्पण और सहनशीलता से जीवन में काफी विकास हो सकता है।

इस अवसर पर सरदारगढ़ से समागत कानपुर के पूर्व अध्यक्ष सेवा निर्वित न्यायधीश डॉ० बी०एल० बाबेल ने कहा कि संसारी सुख को छोड़कर आध्यात्मिक सुख की ओर प्रस्थान करने का नाम दीक्षा है।

मुनि प्रकाश कुमार जी ने कहा कि दीक्षा से व्यक्ति जीवन में सुख और शांति का अनुभव करता है। प्रारंभ में थोड़ी कठिनाई आ सकती है किंतु मनुष्य को उस कठिनाई से घबराना नहीं चाहिए। समता से सहन करना चाहिए। मैंने देखा मुमुक्षु मुदित को और बहुत निकटता से देखा मुझे अच्छा लगा गुरुदेव को मैंने निवेदन किया मुदित के अंदर में मूल गुण अच्छे हैं, बस गुरुदेव ने हमारी बात पर ध्यान दिया और इनको मुनि दीक्षा का आदेश दे दिया। मेरा परम सौभाग्य रहा कि मुझे संजय कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में यात्राओं के साथ बैरागी को भी तैयार करने का मौका मिला है।

मुनि धैर्य कुमार जी ने कहा कि कुछ तत्त्व शाश्वत होते हैं, कुछ तत्त्व अशाश्वत होते हैं, चेतना के पर्याय बदलते रहते हैं। दीक्षा, संयम, त्याग यह शाश्वत है। दीक्षा से आत्मा की उपलब्धियों को प्राप्त किया जा सकता है। मुदित भी इस दिशा में आगे बढ़ रहा है, यह प्रसन्नता की बात है।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने गीत गाते हुए कहा कि जीवन की सबसे बड़ी सुरक्षा दीक्षा है। इसके लिए किसी समीक्षा की अपेक्षा नहीं। तेरापंथ की दीक्षा का अर्थ है–समर्पण। समर्पण में शर्त नहीं होती, जहाँ समर्पण होता है वहाँ व्यक्ति विकास करता है।

दीक्षार्थी मुदित जैन ने कहा कि गुरु की करुणा से संयम मिलता है और गुरु के चरणों में जो साधक रहता है वह निर्भय रहता है। जीवन को अनेक प्रकारों के संस्कारों से संस्कारित करने का नाम दीक्षा है। दीक्षा असंयम से संयम की ओर, भोग से त्याग की ओर, अशांति से शांति की ओर, अंधकार से प्रकार की ओर, मृत्यु से अमृत की दिशा में प्रस्थान करने का नाम है। मुझे मुनि संजय जी, मुनि प्रकाश जी और मुनि धैर्य जी, मुनि सिद्धप्रज्ञ जी जैसे चार-चार संतों का सान्निध्य मिला, जिसके चलते मैंने बहुत कुछ सीखा और आज मैं मुनि प्रकाश कुमार जी की कृपा से अब दीक्षा की ओर प्रस्थान कर रहा हूँ। मैं अपने परिजनों को भी बहुत साधुवाद देना चाहूँगा, जिन्होंने मुझे इस मार्ग पर आगे बढ़ने में पूरा सहयोग दिया। दिवेर भी मुझे याद रहेगा, यहाँ का स्थान, यहाँ के लोग मेरे लिए बहुत उपयोगी बने।

अणुव्रत विश्व भारती के उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल ने कहा कि मुनिश्री धर्मसंघ के क्षेत्र में इतना बड़ा काम कर रहे हैं, यह हमारे लिए बहुत गौरव की बात है। बैरागी को तैयार करना बहुत कठिन होता है।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश श्रीमाल ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेरापंथ कन्या मंडल, दिवेर ने किया। सभा के मंत्री बाबूलाल लोढ़ा ने स्वागत एवं आभार ज्ञापन किया। तेममं की अध्यक्षा पारस देवी चोरड़िया, महिला मंडल, मुंबई-दिवेर की ओर से शब्द चित्र प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर शकुंतला, कुसुम हिंगड़, पायल श्रीश्रीमाल, प्रेक्षा कोठारी, शिक्षक जेठाराम सालवी, नरेंद्र श्रीमाल आदि ने भाव एवं मंगलभावना प्रस्तुत की। टीपीएफ के उपाध्यक्ष नवीन चोरड़िया ने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर बाहर से पधारे गणमान्य व्यक्तियों का साहित्य के माध्यम से सम्मान किया गया। कार्यक्रम में आमेट, छापली, पड़ासली, भीम, राजनगर, कांकरोली, नरदास का गुड़ा, बड़ौदा, सरदारगढ़, तासोल, मजेरा, जोजावर, बगड़, अंटालिया, नन्नाना आदि क्षेत्रों से अतिरिक्त मुंबई से बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि प्रकाश कुमार जी ने किया। कार्यक्रम में दीक्षार्थी मुदित एवं उनके परिवार का सम्मान किया गया। कार्यक्रम दीक्षार्थी के माता-पिता मनोज एवं सीमा विशेष रूप से उपस्थित थे।

शपथ ग्रहण समारोह

माधावरम्, चेन्नई।

टीपीएफ, चेन्नई के नए अध्यक्ष एवं कार्यसमिति का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ जैन स्कूल, माधावरम् में मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र के मंगलाचरण पश्चात डॉ० कमलेश नाहर ने स्वागत स्वर में टीपीएफ की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। राकेश खटेड़ एवं उनकी टीम को सफल कार्यकाल की समाप्ति पर बधाई दी। चेन्नई ब्रांच के आगामी-२०२२-२३ वर्ष के लिए अध्यक्ष के रूप में प्रसन्न बोथरा के नाम की घोषणा की।

नव मनोनीत अध्यक्ष ने अपने अध्यक्षीय अभिव्यक्ति में आगामी कार्यकाल की रूपरेखा के बारे में बताया और अपनी टीम की घोषणा की। डॉ० कमलेश नाहर ने सभी को मुनिश्री के सान्निध्य में पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने अपने प्रेरणा पाथेय में टीपीएफ को एक प्रबुद्ध वर्गीय संगठन बताया एवं धर्मसंघ की प्रभावना और अपनी आत्मा के कल्याण के उद्देश्य के साथ सलक्ष्य अच्छी गतिविधियों से टीपीएफ के नाम को रोशन करने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में तेरापंथी ट्रस्ट माधावरम् के पदाधिकारी, संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी सहित समाज के कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। आभार ज्ञापन मंत्री सुधीर आंचलिया ने किया।

दीक्षार्थी मुमुक्षु मुदित का मंगलभावना समारोह

वाशी।

मुमुक्षु मुदित का मंगलभावना समारोह तेरापंथ भवन, वाशी में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी पंकजश्री जी के नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। मंगलाचरण नेरुल महिला मंडल द्वारा किया गया। वाशी महिला मंडल एवं अनीता सियाल द्वारा विशेष गीतिका प्रस्तुत की गई।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष विनोद बाफना, तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी, भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन महामंत्री बाबूलाल बाफना, अभातेमम कार्यकारिणी सदस्य निर्मला चंडालिया, महिला मंडल संयोजिका अनीता चपलोत, निवर्तमान अध्यक्ष सुरेश बाफना, वरिष्ठ उपासक सोहनलाल कोठारी ने मंगलभावना प्रेषित की।

साध्वी ललिताश्री जी, साध्वी सम्यक्‌यशा जी ने भी आध्यात्मिक भावना प्रेषित की। साध्वी पंकजश्री जी ने कहा कि मुमुक्षु मुदित के जन्म के समय वे हरियाणा में विराज रहे थे, साध्वीश्री जी ने मुमुक्षु के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना की और मुमुक्षु के माता-पिता को खूब साधुवाद दिया।

मुमुक्षु मुदित ने सभी से निवेदन किया कि दीक्षा दिवस के दिन आप सभी जन सिरियारी पधारें। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शारदाप्रभा जी ने किया।

वाशी, नेरुल, कोपरखेरने, नवी मुंबई श्रावक-श्राविका उपस्थित थे। कार्यक्रम सफल बनाने में तेरापंथ सभा मंत्री अर्जुन सोनी, तेयुप मंत्री महावीर हिरण, महिला मंडल संयोजिका इंदु बड़ाला का सहयोग रहा।

मुमुक्षु दीक्षार्थिनी सोनल पीपाड़ा का मंगलभावना समारोह

गांधीनगर।

मुमुक्षु दीक्षार्थिनी सोनल पीपाड़ा का मंगलभावना समारोह शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि जैन समाज में तेरापंथ धर्मसंघ का सौभाग्य है कि सभी साधु-साध्वियाँ ही नहीं संपूर्ण संघ एक गुरु के अनुशासन में चलता है। दीक्षार्थिनी सोनल को विशेष आशीर्वाद के साथ आपने कहा कि विजय, समर्पण, समता, श्रद्धा के साथ गुरु के इंगित की आराधना में दर्शन ज्ञान के साथ चारित्र की महान साधना सफल होती है।

साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि मुमुक्षु दीक्षार्थिनी सोनल का महान सौभाग्य है कि परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी के करकमलों से दीक्षित हो रही है। सोनल संगीत विद्या में विशिष्ट मधुर स्वर संपन्न है। विलक्षण प्रतिभा संपन्न होने के साथ अन्य अनेक कला से परिपूर्ण भी है। अनुशासित, विनय एवं सेवाभाव आदि गुणों से विभूषित होकर मोक्ष मार्ग की विशेष साधना करें, यह हमारा बधाई के साथ आशीर्वाद है।

सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। महासभा से प्रकाश चंद लोढ़ा, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्ण माला पोखरना, तेयुप अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, टीपीएफ अध्यक्ष हितेश गीड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, परामार्थिक शिक्षण संस्था अध्यक्ष बजरंग जैन, ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाश बाबेल एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रेक्षा संगीत सुधा, प्रज्ञा संगीत सुधा एवं अनेक सदस्यों द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। संचालन मंत्री गौतम मांडोत ने किया। आभार ज्ञापन सुधीर पोखरना ने किया।

दो तीर्थ का आध्यात्मिक मिलन

स्वादडी गाँव।

मेवाड़ राजस्थान के स्वादडी गाँव में ४ सिंघाड़ों का आध्यात्मिक मिलन हुआ। द्रुगति से लाडनूं से मुंबई की ओर विहाररत साध्वी जिनप्रभा जी आदि, साध्वी सुषमा कुमारी जी व साध्वी विमलप्रज्ञा जी, देवगढ़ से विहार कर टिकर गाँव की ओर प्रवर्धमान थे।

वहीं मुनि यशवंत कुमार जी टेगी गाँव से विहार कर देवगढ़ की ओर पधार रहे थे। मार्गवर्ती गाँव स्वादडी में मुनिश्री और साध्वीवृंद का आध्यात्मिक मिलन हुआ।

जैन धर्म के साधु और साध्वी इन दो तीर्थ के चरण सिंघाड़ों का सौहार्दपूर्ण आध्यात्मिक मिलन देख स्वादडी ग्रामवासी व सेवारत मुंबई व देवगढ़ श्रावक समाज अभिभूत था।

इस अवसर पर अभातेयुप के साथी जितेश पोखरना सहित देवगढ़ का श्रावक समाज सक्रिय रूप से विहार सेवा में अपनी सेवाएँ दे रहा थे।

'उम्मीद एक बेहतर कल की' कार्यक्रम का आयोजन

राउरकेला।

तेममं ने अभातेमम के निर्देशानुसार 'उम्मीद एक बेहतर कल की' प्रोजेक्ट का आगाज सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में किया गया। सर्वप्रथम अध्यक्ष सरोज गोलछा ने सभी बच्चों को सुसंस्कार जीवन जीने के लिए आह्वान किया और उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की।

सहमंत्री कविता डागा ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। सचिव विनीता जैन ने ईमानदारी पर आधारित कहानी सुनाई। संगीता दुगड़ ने महात्मा गांधी के जीवन के प्रेरक प्रसंग बताए और बच्चों को भी हमेशा सत्यनिष्ठ बनने की प्रेरणा दी।

स्नेहलता चोरड़िया ने प्लास्टिक का उपयोग ना करने की सलाह दी और इससे होने वाली हानियाँ बताई। सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष रूपचंद बोथरा ने बल और बुद्धि पर बच्चों को कहानी सुनाई। सभी बच्चों को पेन बाँटे गए और जिन्होंने सवालों के सही जवाब दिए उन्हें पुरस्कार भी दिए गए।

महिला मंडल की सदस्या चंदा बोथरा ने अपने जन्मदिन की खुशी में बच्चों को बिस्किट के पैकेट वितरित किए। स्कूल के प्रधानाध्यापक और शिक्षकों ने महिला मंडल के इस कार्य की प्रशंसा की और आभार व्यक्त किया।

उड़ान वार्षिक उत्सव का आयोजन

ठाणे।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में वार्षिक उत्सव मनाया गया। चारों क्षेत्र के सभी गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही। मुंबई ज्ञानशाला की आंचलिक संयोजिका अनीता परमार व विभागीय संयोजिका अंजू चौधरी की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। सभी का स्वागत सीमा चोरड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन परीक्षा विभाग की वीणा सेठिया ने किया। सभी बच्चें ने नाटक की प्रस्तुति दी। स्वागत गीत के द्वारा बच्चों ने सभी का स्वागत किया। फैंसी ड्रेस की सुंदर प्रस्तुति सभी बच्चों ने दी।

साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि माता-पिता संस्कारी होंगे तो बच्चे भी उनका अनुसरण करेंगे। बच्चे जैसा देखते हैं, वैसे ही करते हैं। साध्वीश्री जी का पूरा स्नेह और वात्सल्य ठाणे ज्ञानशाला को मिला। श्रेष्ठ ज्ञानार्थी आरव श्रीश्रीमाल और विधि कच्छारा को दिया गया। सम्मान पूर्व श्रेष्ठ ज्ञानार्थी लविषा दुगड़ ने किया। श्रेष्ठ अभिभावक पंकज बोथरा और हर्षा श्रीश्रीमाल को दिया गया। १०० प्रतिशत उपस्थिति नेत्रिका बोथरा, जूनियर साइंटिस्ट उत्कर्ष छाजेड़ का ज्ञानशाला में सम्मान किया गया। अनुशासन में श्रेष्ठ रचित बाफना, नक्ष श्रीश्रीमाल, हिमांशी हिंगड़, जीविका साबद्रा, मेहर सिंघवी, ऋषि चोरड़िया, अक्षत रांका सभी का सम्मान किया गया। मुख्य प्रशिक्षिका सुनीता बाफना ने २०२१-२२ की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

मुख्य आंचलिक संयोजिका अनीता परमार बीवी बच्चों की प्रस्तुति की प्रशंसा की। भिक्षु महाप्रज्ञ ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्मल श्रीश्रीमाल, ठाणे सभा अध्यक्ष रमेश सोनी, मंत्री नरेश बाफना सभी ने ज्ञानशाला के कार्यक्रम की प्रस्तुति के बारे में बताया। ज्ञानशाला संयोजक नीरज बोथरा ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

हर मानव नास्तिकता से आस्तिक बनकर आत्मकल्याण कर सकता है

कांकरोली।

मृगसर वदी एकम के दिन प्रस्थान के पूर्व साध्वी मंजुयशा जी ने परदेशी राजा का गद्यमय-पद्यमय सरस भावों से व्याख्यान सुनाया।

प्रवचन का प्रारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के मंगल गान से किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर के शासन में श्वेतांबिका नगरी में एक परदेशी नाम का राजा था। वह धर्म-कर्म के रहस्य से बिलकुल दूर रहने वाला पूरा ही नास्तिक था।

राजा के चित्त का नाम का मंत्री था। वह जैन धर्म का पक्का अनुयायी एवं वीतराग प्रभु का पक्का भक्त था। धर्म के प्रति उसके भीतर पूर्ण अनुराग था। एक बार ज्ञानी पुरुष केशी स्वामी का नगरी में पदार्पण हुआ। राजा जब संतों के सामने आया तो संत ज्ञानी थे, उन्होंने उसकी नास्तिकता को जान लिया। राजा के मन में अनेक आत्मा, कर्म संबंधी आदि जिज्ञासाएँ थीं। उन जिज्ञासाओं का सटीक समाधान पाकर उसका अहं चूर-चूर हो गया और वह जैन धर्म का पक्का अनुयायी बन सच्चे श्रावक की कोटि में आ गया।

साध्वीवृंद ने एक गीत प्रस्तुत किया। पूरी परिषद ने भी साध्वीवृंद से करबद्ध क्षमायाचना की।

प्रवचन के तत्काल बाद मंगलपाठ सुनाया और प्रज्ञा विहार से प्रस्थान किया। पूरे जुलूस के साथ महिलाएँ, कन्याएँ, युवक अपने-अपने गणवेश में अन्य सभी भाई-बहन सैकड़ों की संख्या में बड़ी कतार में साध्वीवृंद के साथ कदम दर कदम चल रहे थे। साध्वीश्री जी सुरेश कुमार कचछारा के निवास स्थान पर पधारे।

तुलसी की अमर गाथा नाटिका का मंचन

गंगाशहर।

आचार्यश्री तुलसी की महाप्रयाण भूमि, गंगाशहर में उनके जीवन को जीवंत व्याख्यायित करने वाली नाटिका का तेरापंथ भवन में मंचन हुआ।

तेरापंथ सभा, गंगाशहर के मंत्री रतनलाल छलाणी ने बताया कि मुनि शांति कुमार जी के सान्निध्य में इस कार्यक्रम में छोटे बच्चों से लेकर वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं ने अपने प्रदर्शन द्वारा किरदारों को मंच पर मानों जीवंत कर दिया।

तेयुप मंत्री भरत गोलछा ने बताया कि आचार्यश्री तुलसी के १०९वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में तेरापंथी सभा, तेयुप, तेममं के संयुक्त तत्त्वावधान में इस नाटिका का मंचन हुआ। इस नाट्य की पटकथा का लेखन पीयूष नाहटा द्वारा किया गया।

मुनि जितेंद्र कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी का जीवन एक महानता की अमर गाथा है। इतिहास को पढ़ना, सुनना और इससे भी अधिक होता है देखना।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल ने मंगलाचरण के साथ की। तेयुप अध्यक्ष अरुण कुमार नाहटा ने स्वागत वक्तव्य दिया एवं सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने आभार प्रकट किया। मंच संचालन सभा मंत्री रतनलाल छलाणी ने किया। नाटिका में तेरापंथी सभा, तेयुप, महिला मंडल, किशोर मंडल व कन्या मंडल, गंगाशहर के सदस्यों द्वारा किरदार को मंच पर प्रदर्शित किया गया।

कार्यक्रम संयोजना में तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल, किशोर मंडल के सभी साथियों का सहयोग रहा।

कार्यकर्ता सम्मान समारोह का आयोजन

माधावरम्, चेन्नई।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट बोर्ड, चेन्नई द्वारा मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि हर सामाजिक संस्था की रीढ़ होते हैं कार्यकर्ता। वे जहाँ अपने समय, श्रम का नियोजन करते हैं, वहीं कार्य संपादन में निस्वार्थ भाव से जुड़ जाते हैं। उसे अपना मूल समझते हैं, तभी कार्यक्रम भी सफलता के सौपान को प्राप्त करते हैं। मुनिश्री ने कहा कि कार्यकर्ता चीनी की तरह होने चाहिए। मुनिश्री ने चीनी की विशेषता बताते हुए कहा कि चीनी उज्ज्वलता लिए होती है, उसी तरह कार्यकर्ता भी उज्ज्वल रहे, अपने जीवन में दाग, धब्बे लगें ऐसा कोई कार्य नहीं करें। मुनिश्री ने कहा कि तिनका-तिनका मिलकर झाड़ु, मोती-मोती मिलकर मोतियों का हार, ईंट-ईंट मिलकर दीवार बन जाती है। उसी तरह हर एक कार्यकर्ता मिलकर ही स्वस्थ समाज बना सकते हैं।

ट्रस्ट बोर्ड की ओर से इस पूरे चातुर्मास काल में विशेष सेवा देने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रवीण सुराणा ने किया।

स्वस्थ नारी से ही स्वस्थ परिवार का निर्माण

बालोतरा।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम के तत्त्वावधान में निर्माण परियोजना के अंतर्गत घरों में काम करने वाली बहनों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और उनके सम्मान में कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा ने अपने वक्तव्य के द्वारा सभी बहनों और अतिथियों का स्वागत किया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि इस कार्यक्रम में १५ होम हेल्पर्स बहनों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० श्यामा चौधरी (स्त्री रोग विशेषज्ञ) द्वारा मासिक धर्म व गर्भावस्था के दौरान स्वच्छता का ध्यान रखते हुए कैसे अपने आपको स्वस्थ रखें व इस समय कौन सा आहार पौष्टिक होता है, इसका प्रशिक्षण दिया।

कार्यक्रम के राजनीतिक विशिष्ट अतिथि के रूप में पार्षद चंद्रा बालड़ ने 'बेटी बचाओ' मिशन के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में आने वाली सभी बहनों को मंडल द्वारा उपहार देकर सम्मानित किया गया। सभी ने तेमम को धन्यवाद दिया।

मुख्य अतिथि डॉ० श्यामा चौधरी का भी तेमम द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सहमंत्री रेखा बालड़ ने किया। मंत्री संगीता बोथरा द्वारा संचालन किया गया। इस कार्यक्रम में उपाध्यक्ष रानी बाफना, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, पूर्व परामर्शक कमलादेवी ओस्तवाल, देवी बाई छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष सहित लगभग ८० बहनें उपस्थित थीं।

जीवन-विज्ञान, अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान

कलम्बेल्ला।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि विद्यालय वह पावन मंदिर है जहाँ अनगढ़ पत्थर आते हैं जो टीचर की पैनी-छैनी के द्वारा एक मूर्ति के रूप में निर्मित होते हैं। विद्यालय जहाँ बच्चे शिक्षित होते हैं और इनकी शिक्षा को जीवन में अपनाने वाले विकसित होते हैं। विद्यालय एक पावन धाम है, जो बच्चों के जीवन को परिमार्जित कर उसे एक उसके जीवन को सुहावना, लुभावना, मनभावना बना देता है।

मुनिश्री ने कहा कि बच्चों को अपने स्वर्णीम भविष्य के निर्माण के लिए जिंदगी में नशे से बचना चाहिए। रोज सुबह माता-पिता का आशीर्वाद लेना चाहिए। अपनी प्रतिभा का विकास कर अपने गुणों का ग्राफ बढ़ाना चाहिए। मुनिश्री ने सभी बच्चों को नशामुक्त जीवन जीने के संकल्प करवाए।

युवा संत मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि जो करता है महाप्राणध्वनि का अभ्यास उसका होता है विकास, जो करता है जीवन विज्ञान वो बनता है महान। बाल संत जयदीप कुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

मुनिश्री १७ किलोमीटर का विहार का कलम्बेला गवर्नमेंट हायर प्राइमरी स्कूल में पधारे। जहाँ अनिल कुमार ने मुनिश्री का स्वागत किया। मुनिश्री के सान्निध्य में 'कैसे हो भारत का भविष्य का निर्माण' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुनि अर्हत कुमार जी ने बच्चों को अणुव्रत के नियम दिलवाए व मुनि भरत कुमार जी ने विद्यार्थियों को जीवन-विज्ञान व प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। हिंदी से कन्नड़ में अनुवाद रजत वेद ने किया। कार्यक्रम में १० शिक्षकों व अच्छी संख्या में विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर तेयुप, बैंगलुरु से रजत बेद, रमेश सालेचा, दीपक गादिया, कुलदीप सोलंकी, धीरज सेठिया व महिला मंडल की ओर से लता गादिया और विमला बाई भंसाली उपस्थित थे।

बाल दिवस पर बिखरी बच्चों की मुस्कान

भीलवाड़ा।

तेरापंथी सभा, भीलवाड़ा द्वारा संचालित तेरापंथ महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में बाल दिवस के अवसर पर किड्स कार्निवाल का आयोजन किया गया। जहाँ पर शिक्षकों द्वारा विभिन्न मनोरंजन और खेलकूद एवं खाने के स्टॉल लगाए गए, जहाँ पर बच्चे अपने अभिभावकों के साथ पहुँचे और मेले का लुफ्त उठाया।

मेले में मुख्य अतिथि के रूप में तेरापंथ समाज अध्यक्ष जसराज चोरड़िया एवं टीम के लोगों ने मेले का उद्घाटन किया।

बच्चों के द्वारा गुब्बारे उड़ाकर उन पर पुष्प वृष्टि कर स्वागत किया गया। स्कूल की प्रधानाचार्य ने बताया कि शिक्षकों एवं स्कूल स्टॉफ की कड़ी मेहनत के बदौलत यह बाल मेला आयोजित किया गया।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

चरण स्पर्श एवं तप अभिनंदन समारोह

विले पार्ले।

साध्वी राकेश कुमारी जी के सान्निध्य में, अभातेयुप के निर्देशन में विले पार्ले तेयुप द्वारा कार्यशाला 'चरण स्पर्श एवं तप अभिनंदन' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा नवकार मंत्र एवं रेणु कोठारी द्वारा मंगलाचरण से हुई।

मेघराज धाकड़ ने पधारे हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। तेरापंथी सभा, मुंबई के अध्यक्ष मदन तातेड़ सभा के कार्याध्यक्ष नवरतन गन्ना, तेमम की मंत्री अल्का मेहता, मुख्य व्यवस्थापक मनोहर गोखरू, महेश बाफना, ज्ञानशाला संयोजिका अनिता परमार ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वी मलयविभा जी ने कहा कि कोई भी पुत्र अपने माता-पिता का कर्ज नहीं चुका सकता, उन्होंने चरण स्पर्श जैसे कार्यक्रम के आयोजन पर बल दिया।

साध्वी राकेश कुमारी जी ने सभी तपस्वियों की अनुमोदना की। साध्वीश्री ने विले पार्ले श्रावक समाज द्वारा की जा रही व्यवस्थाओं की सराहना की।

तेयुप अध्यक्ष अरविंद कोठारी ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं पूरे चातुर्मास में संपादित गतिविधियों से अवगत कराया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, प्रसिद्ध मोटिवेशनल स्पीकर दिनेश बुरड़ ने परिवार में पनप रहे मतभेदों को दूर करने का प्रयास किया। सदन में उपस्थित सभी परिवारों को मंच पर लाकर आपस में खमतखामणा करवाई।

सभी गणमान्य व्यक्तियों ने मोमेंटो द्वारा दिनेश बुरड़ का सम्मान किया एवं कार्यशाला के लिए आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु शैलेश कोठारी, अनिल बाफना, मुकेश कोठारी, महेंद्र वड़ाला, सुनील वड़ाला एवं अंकिता बड़ाला ने विशिष्ट योगदान दिया। कार्यक्रम का संचालन मुंबई सभा मंत्री दीपक डागलिया ने किया।

स्वर साधना से मिल सकती है सिद्धि, शांति और सफलता

किलपॉक।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने 'भाग्योदय का अद्‌भुत विज्ञान-स्वर एवं शगुन विज्ञान' विषय पर तेयुप की आयोजना में कार्यक्रम आयोजित हुआ।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि आत्मदर्शन, आत्म रमण, आत्म मंथन, आत्म शक्ति जागरण में स्वर विज्ञान सशक्त माध्यम है। स्वर विज्ञान प्रभावी विद्या है। उसको साधने के लिए श्रद्धा, विश्वास और समर्पण जरूरी है।

मुनिश्री ने स्वर विज्ञान को साधना सिद्धि और सफलता का प्रयोग बताया। आरोग्यता का सूत्र व तेजस्वी एवं आभामंडल निर्माण का प्रभावी प्रयोग बताया। तेरापंथ के आचार्यों की अनुभूति से निष्णांत शगुन विज्ञान के बारे में जानकारी दी।

विशिष्ट अतिथिगण आनंद राव विष्णु पाटिल, राज्यपाल के प्रधान सचिव ने कहा कि तेयुप के त्रिआयाम सेवा, संस्कार, संगठन को अपनाकर चला जाए तो भारत सुपर पावर बन सकता है। साधु-साध्वियों की अपनी साधना से, अनुभव से अनुभूत वाणी सुन आचरण करने से हम जिंदगी में आगे बढ़ सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि सुनील माथुर आयकर जाँच महानिदेशक ने अति उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण अत्यधिक खनिज पदार्थों के दोहन से उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण, मौसम परिवर्तन को रोकने के लिए मुनि-ऋषियों की जीवनशैली को उपयोगी बताया।

मुनि नरेश कुमार जी ने महामंत्र नवकार संगीत से स्तुति की। नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ कार्यक्रम में परमार परिवार की बहनों ने मंगलाचरण एवं अंत में कृतज्ञता के साथ विदाई गीत की प्रस्तुति दी। स्वरूपचंद दांती ने गीत की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर अभातेयुप कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, रमेश सुतरिया, भरत टाटिया इत्यादि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी ने स्वागत एवं आभार ज्ञापन हर्षा परमार ने किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मंत्री संदीप मूथा ने प्रायोजक अशोक कुमार उगमराज परमार परिवार के प्रति धन्यवाद दिया। कार्यक्रम संयोजक दिनेश भंसाली के साथ तेयुप कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा। तेयुप द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

अहमदाबाद।

अभातेयुप का लोकप्रिय प्रकल्प व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत 'खट्टा मीठा' पारिवारिक समस्याओं पर आधारित कार्यशाला, शाहीबाग में तेयुप अहमदाबाद द्वारा आयोजित की गई।

अभातेयुप व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश बुरड़ की विशेष उपस्थिति में प्रशिक्षक अनिल दुगड़ एवं नमिता दुगड़ ने कार्यशाला में संभागियों को परिवार में सामंजस्य बनाए रखने के लिए अनेक विषयों पर प्रशिक्षित किया। जो सही मायनों में जीवन को नई दिशा देने वाला रहा।

कार्यशाला की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई। तेयुप, अहमदाबाद के अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने अध्यक्षीय स्वागत वक्तव्य देते हुए सभी विशेष उपस्थित महानुभावों एवं कार्यशाला संभागियों का अभिवादन किया। उपाध्यक्ष प्रदीप बागरेचा ने प्रशिक्षकों का संक्षिप्त में परिचय दिया। व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश बुरड़ ने कार्यशाला विषय पर विस्तृत जानकारी दी।

उपस्थित अभातेयुप सदस्य व तेयुप पदाधिकारी ने मिलकर 'प्रायोजक धनराज विजय छाजेड़ का सम्मान मोमेंटो द्वारा किया व प्रशिक्षकों का सम्मान साहित्य द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री दिलीप भंसाली ने किया। कार्यशाला में कुल ३० सहजोड़े (६० संभागियों) ने भाग लिया। कार्यशाला को सफल बनाने में पदाधिकारी व कार्यसमिति सदस्यों का सराहनीय श्रम रहा। कार्यक्रम के अंत में सहमंत्री कुलदीप नवलखा ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

धर्म ही है भारत की आत्मा

माधावरम्, चेन्नई।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर कहा कि जाति, पंथ, संप्रदाय के आधार पर बाँटना, देश की अखंडता एवं संप्रभुता के लिए खतरा है। जातिवाद, संप्रदायवाद, प्रांतवाद देश के लिए घातक है। हमें भाषा से ज्यादा सद्‌भाव पर बल देना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि धर्म का संबंध आत्मा-परमात्मा से ही नहीं है, वह नीति और व्यवहार का भी आधार है। नैतिक मूल्यों में जो गिरावट आई है, उसमें भी बड़ा कारण धर्म के प्रति अनास्था है। अनेकांतवाद विचारधारा से इस पर चिंतन जरूरी है।

मुनिश्री से सज्जनबाई रांका ने ८९वीं अठाई की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। इस चातुर्मास में यह इनकी चौथी अठाई है। आपके यह १५वाँ वर्षीतप है और ४ मासखमण भी किए हुए हैं।

बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन

डोंबिवली।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में डोंबिवली द्वारा बारह व्रत कार्यशाला साध्वी प्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित हुई। कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष ललित मेहता, मंत्री राहुल कोठारी, उपाध्यक्ष जीवन सिंघवी, प्रमोद इटोडिया, मनीष धींग, तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष दलपत इटोडिया, पारस बड़ाला, महिला मंडल संयोजिका किरण कोठारी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

साध्वी प्रतीकप्रभा जी ने बारह व्रत संकल्प पत्र को भरने का आह्वान किया और बहुत ही सरल तरीके से समझाते हुए सभी को व्रतों को ग्रहण करने को कहा। इस कार्यक्रम को सभी ने उत्साह एवं संयम से सुना और समझा।

नि:शुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के अंतर्गत ६६वें कन्नड़ राज्योत्सव के उपलक्ष्य में नि:शुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप शिविर स्थानीय मरियापनपालिया स्थित गायत्री पार्ग में आयोजित किया गया। कैंप की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। शिविर में कुल ७२ लोग लाभान्वित हुए।

इस अवसर पर राजाजीनगर तेरापंथ सभा ट्रस्ट के संरक्षक जुगराज श्रीश्रीमाल एवं तेयुप अध्यक्ष अरविंद गन्ना, निवर्तमान अध्यक्ष मनोज मेहता, कमलेश चोरड़िया, भरत बाफना, राजेश देरासरिया ने शिविर के आयोजन में अपना श्रम नियोजित किया।

अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल-कोलकाता।

एटीडीसी, पूर्वांचल के लिए यह गौरव का विषय है कि डॉ० धीरज मरोठी जैसे चिकित्सक हमसे जुड़े हुए हैं। डॉ० मरोठी के निर्देशन में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी, पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। कुल १० व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया।

तेयुप डॉ० धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त निरंतर सहयोग के लिए विशेष साधुवाद प्रेषित करती है।

जरूरतमंद लोगों को राशन वितरित

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेयुप के निर्देशन में Leo Club Kolkata Sunrise के साथ मिलकर Insaniyat A series of Humanity के तहत उल्टाडांगा के पास एक बस्ती में लगभग २०० जरूरतमंद लोगों को राशन का सामान वितरित किया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का जाप किया गया।

इस सेवा कार्य में तेयुप, पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव खटेड़, उपाध्यक्ष-प्रथम अमित बैद, मंत्री हेमंत बैद, सहमंत्री-प्रथम व किशोर मंडल प्रभारी यश दुगड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की सहभागिता रही।

दो आध्यात्मिक धाराओं का मिलन

ए०के०बी० नगर, चेन्नई।

श्री संभवनाथ जैन भवन, एमकेबी नगर, चेन्नई में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी एवं मूर्तिपूजक प०पु०आ०भ० श्रीमद् विजय तीर्थभद्रसूरीश्वरजी महाराज की शिष्या पूज्य साध्वी जयरेखाश्री जी आदि का आध्यात्मिक मिलन हुआ।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी केएलपी अभिनंदन अपार्टमेंट से विहार कर लालचंद मेहता के निवास स्थान पर पधारे। वहाँ पर श्री संभवनाथ जैन भवन में विराजित साध्वी जयरेखाश्री जी आदि से सौहार्दपूर्ण वातावरण में आध्यात्मिक मिलन हुआ। साध्वीवृंद ने आध्यात्मिक विचारों का आदान-प्रदान किया।

इस अवसर पर लालचंद मेहता, महेंद्र कातरेला, दीपचंद पुनमिया, करोड़ीमल तातेड़, मंगलचंद डागा, इंद्रचंद कोठारी आदि अनेकों जैन धर्मावलंबी बंधु उपस्थित थे।

आत्मा से परमात्मा बनने की साधना के लिए मनुष्य गति का करें उपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

ईडवा, २२ नवंबर, २०२२

क्षमा के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः डेगाना से १४ किलोमीटर का विहार कर ईडवा पधारे। ईडवा वासियों ने मानवता के मसीहा का भावभीना स्वागत किया। मुख्य प्रवचन में मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए क्षमामूर्ति ने फरमाया कि दुनिया में अनंत प्राणी हैं। उन अनंत प्राणियों में थोड़े से संघी मनुष्य भी हैं। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जिसमें पूर्णतया योग्यता आ जाए तो सीधा मोक्ष में जा सकता है। इस जीवन के बाद मुक्ति को प्राप्त कर सकता है।

चाहे तिर्यंच, नरक या देव गति में ही क्यों न हो, उस जन्म में कोई सीधा मोक्ष में नहीं जा सकता है। मनुष्य जन्म एक द्वार है, इस भवारण्य जंगल से निकलने का एक मार्ग है। इस मानव जीवन से आत्मा से परमात्मा बनने की विशेष साधना की जा सकती है। अगर ये गेट ऐसे ही निकल जाए तो पीछे वापस चक्कर खाना पड़ सकता है। यह एक प्रसंग से समझया।

एक बार मनुष्य जन्म मिल गया और इसमें भी धर्म नहीं किया तो मरने के बाद वापस कब मनुष्य जन्म मिलेगा क्या पता? अभी तो मनुष्य जन्म प्राप्त है। इस गेट से अभी निकल सके या उसके निकट पहुँच सके तो हमारे लिए श्रेयस्कर है। इस मानव जीवन को यों ही गँवा देने वाला नासमझ आदमी है।

इस मनुष्य जन्म को पाकर कोई आदमी पाप कर्म में जाता है, तो आगे उसका क्या होगा? आदमी चिंतन करे कि मेरा वर्तमान जीवन भी अच्छा रहे। वर्तमान में तो हम पूर्व की पुण्याई भोग रहे हैं, पर आगे के लिए हम क्या कर रहे हैं? शरीर अध्रुव है। जीवन अशाश्वत है, धन-संपत्ति भी स्थायी नहीं है, मृत्यु तो धीरे-धीरे निकट आ रही है। मानव जीवन में संवर-निर्जरा की साधना हो तो जीवन सफल-सुफल बन सकता है।

जैन-अजैन कोई हो जीवन में अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम आ जाएँ तो अच्छा होगा। 'इंसान पहले इंसान फिर हिंदू या मुसलमान' संयम और शांति से जीएँ और जितना हो सके संयम और शांति का मार्ग औरों को बताने का प्रयास करें। हिंसा से दुःख पैदा होता है। अहिंसा से सुख मिलता है। हमारी जीवनशैली अहिंसा से ओत-प्रोत हो। हम मानव जीवन को धर्म की दृष्टि से सुफल बनाने का प्रयास करें, यह काम्य है।

आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के तीन सूत्रों को समझाकर स्थानीय लोगों को संकल्प स्वीकार करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्यप्रवर जहाँ पधारते हैं वहाँ परिषद अच्छी संख्या में जम जाती है, उसका कारण है पूज्यप्रवर का दृष्टिकोण और परोपकार की भावना। संत परहित में ही अपना उद्यम करते हैं। इसलिए वे सबके लिए अभिवंदनीय बन जाते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में पूर्व सांसद गोपालसिंह शेखावत, तेरापंथ महिला मंडल, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, तेरापंथ समाज ने समूह गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

बुद्धि के साथ रहे आचरण की शुद्धि : आचार्यश्री महाश्रमण

गवारड़ी, २५ नवंबर, २०२२

वर्तमान के वर्धमान आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः १३ किलोमीटर विहार कर गवारड़ी के राजकीय विद्यालय में पधारे। छात्रों एवं स्थानीय लोगों को मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि अर्हत् वाङ्मय में कहा गया है कि ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान एक पवित्र तत्त्व भी है। जो व्यक्ति अज्ञानी होता है, वह कष्टापतीत हो सकता है। अज्ञान अपने आपमें अच्छी चीज नहीं है।

गुस्सा, अहंकार आदि पापों से भी ज्यादा खराब अज्ञान होता है। अज्ञान के आवरण से आवृत्त आदमी हित-अहित क्या, करणीय-अकरणीय क्या इसका भी बोध नहीं कर पाता। ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी विद्यालय में जाता है। ज्ञान होना अच्छा है, पर साथ में आचार-संस्कार भी होना चाहिए। जीवन का विज्ञान धर्ममय हो। नैतिकता भी जीवन में आए।

ग्रहण शिक्षा आचरण में भी आए। यह एक प्रसंग से समझाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का प्रकाश और आचरण की गति हो तो जीवन अच्छा चल सकता है। अणुव्रत और जीवन-विज्ञान से अच्छे संस्कार आ सकते हैं। अहिंसा, नैतिकता और नशामुक्ति के संस्कार भी विद्यार्थियों के जीवन में आ जाए तो उनका जीवन अच्छा रह सकता है।

बुद्धि के साथ शुद्धि भी रहे। शुद्ध बुद्धि कामधेनू है। बुद्धि से समस्या का समाधान किया जा सकता है। हम बुद्धि का सदुपयोग करें। आचार्यप्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के तीन संकल्पों को समझाकर विद्यार्थियों एवं स्थानीय लोगों को स्वीकार करवाए। सम्यक् दीक्षा भी ग्रहण करवाई।

विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक भालाराम ने पूज्यप्रवर का स्वागत-अभिनंदन किया। स्कूल व्यवस्थापक का व्यवस्था समिति द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीने की कला का महत्त्वपूर्ण सूत्र....

(पृष्ठ १६ का शेष)

शांतिलाल जैन ने कच्छ संघ की ओर से पूज्यप्रवर के चरणों में अपनी भावना रखी। पूज्यप्रवर ने महती कृपा कराते हुए सन् २०२५ का मर्यादा महोत्सव भुज में करने का फरमाया। बाबूलाल सिंघवी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। कीर्तिभाई ने भी अपनी भावना रखी।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी एवं मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कच्छ के बारे में उद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ निरंतर जागरूक रहने वाला व्यक्ति जीवन का सही उपयोग करता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर ने कच्छवासियों पर बरसायी कृपा - भुज में फरमाया २०२५ का मर्यादा महोत्सव

जीने की कला का महत्त्वपूर्ण सूत्र है - दया-अनुकंपा : आचार्यश्री महाश्रमण

पादुकलां, २४ नवंबर, २०२२

मारवाड़ का पादुकलां एक अच्छा श्रद्धा का क्षेत्र है। तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु भी वि०सं० १८३७ में पादुकलां पधारे थे। उन्हीं के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः नौ किलोमीटर विहार कर पादुकलां पधारे। पूज्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जीने की कला का एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है–दया-अनुकंपा। मन में प्राणियों के प्रति अनुकंपा-दया रखना।

दया का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है–किसी दूसरे को तकलीफ न देना। आदमी के मन में अनुकंपा का भाव होता है, तो वह जानबूझकर दूसरों को कष्ट नहीं देता। हम दया के अधिकारी बन जाएँ। जिसके मन में अहिंसा, त्याग का भाव रहता है, वह दया का पालन कर सकता है।

राग के समान दुःख नहीं और त्याग के समान सुख नहीं। त्याग धर्म है, भोग अधर्म है। व्रत धर्म है, अव्रत अधर्म है। तरना और तारना धर्म का काम होता है। इसके लिए दया की नाव पर बैठो। अपनी आत्मा को पापों से बचाकर रखना ही दया है। त्याग और संयम जीवन की एक कला है। संयम ही जीवन है। संयम और त्याग मोक्ष प्राप्त करा सकते हैं। संत तो अकिंचन होते हैं।

पादुकलां तेरापंथ से जुड़ा क्षेत्र है। आचार्यश्री भिक्षु ने वि०सं० १८३७ का चातुर्मास यहाँ किया था। आज यहाँ आना हुआ है। साधु के पास जो है, वो गृहस्थों के पास नहीं है, यह एक प्रसंग से समझाया कि अमूल्य हीरे से ज्यादा कीमती संन्यास है। आचार्य भिक्षु के पास संयम और त्याग रूपी हीरा था।

गृहस्थ को भी अधिकार है, धर्म करने का। प्रेक्षाध्यान से जीवन में समता आ जाती है। समता से फिर अहिंसा, संयम और तप जीवन में आ सकते हैं। ये जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं। जीवन की क्रिया में संयम हो। जीने के तौर-तरीके अच्छे हैं तो जीवन अच्छा है। हम संयमपूर्वक कलापूर्ण जीवन जीएँ। दूसरों को भी संयम से जीवन जीने की प्रेरणा दें। वर्तमान जीवन भी अच्छा और आगे का जीवन भी अच्छा रहे।

पादुकलां के श्रावक भी हैं, जनता भी है। सभी में सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति जैसी बातें रहें। यह काम्य है। सभी को अहिंसक जीवनशैली हेतु तीनों संकल्प समझाकर स्वीकार करवाए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि गुरुदेव का आज पादुकलां पधारना हुआ है। यह आचार्य भिक्षु के भी विहरण का क्षेत्र रहा है। शील की नवबाड़ की रचना आचार्य भिक्षु ने यहीं की थी। आचार्य भिक्षु ने इस धरती को पावन बना दिया था। वर्तमान में आचार्यप्रवर यहाँ पधारे। आचार्य भिक्षु के जीवन प्रसंगों को समझाया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मदन बोहरा, पादुकलां महिला मंडल, कन्या मंडल, तेयुप, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, ज्ञानचंद आंचलिया एवं श्रावकों ने पूज्य चरणों में अपनी भावना रखी।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

जीवन सुखमय बनाने के लिए करें सुविधावादी मनोवृत्ति का त्याग : आचार्यश्री महाश्रमण

नथावड़ा, २३ नवंबर, २०२२

जन-जन को तारने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः ईडवा से १३ किलोमीटर विहार कर नथावड़ा पधारे। मुख्य प्रवचन में परमपूज्य ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि संसार में सुखी होने की बात बताई गई है। सुखी होने के लिए अनेक बातों पर ध्यान दिया जा सकता है। पहली बात बताई गई कि अपने आपको तपाओ, कठोर जीवन जीने का प्रयास रखो।

सुविधा का उपयोग करना अलग बात है, सुविधावादी मनोवृत्ति का बन जाना अलग चीज है। जो सुविधा में रह गया उसको जो अच्छी चीज मिल सकती थी, नहीं मिलती। साधु में परिषहों को सहने का विकास होना चाहिए। साधु मार्ग से च्युत न हो जाए और कर्म निर्जरा करता रहे। सुकुमारता को छोड़ो। परिश्रम से जिंदगी में कुछ प्राप्त हो सकता है। आलस्य और सुविधा में ही पड़े रहेंगे तो जीवन में कुछ प्राप्त करना मुश्किल हो सकता है।

राग-द्वेष भाव को छोड़ो। दूसरे को सुखी देखकर दुःखी मत बनो और दूसरे को दुःखी देखकर के सुखी मत बनो। इससे चित्त की निर्मलता रह सकती है। सबके प्रति प्रमोद भावना हो। हमारे में उदारता की वृत्ति हो। हम वैराग्य भाव में आगे बढ़ें। साधु को संतोष धारण करना चाहिए। अभय का भाव भी रहे। जिसने संतोष और अभय को साध लिया उसे कोई दुखी नहीं बना सकता।

उनका महान भाग्य होता है, जिन्हें साधुत्व मिलता है। हमारा आकर्षण साधुपन, संघ और गुरु भक्ति के प्रति हो। इससे हमारा जीवन निर्मल बन सकता है। गुरुदेव तुलसी ने कितनी लंबी यात्राएँ की थीं। कितना श्रम किया था, यायावर बनकर रहे थे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने भी नवें दशक में यात्राएँ की थीं। श्रम से फल मिल सकता है। सुविधावादी प्रवृत्ति परितक्त करने का प्रयास करना चाहिए।

आज चतुर्दशी/अमावस्या है। पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन कर प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। नव दीक्षित साध्वियों से

लेख-पत्र का वाचन करवाया। एक-एक कल्याणक की बख्शीश करवाई।

पूज्यप्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर स्थानीय लोगों व छात्रों को संकल्प स्वीकार करवाए।

नथावड़ा राजकीय विद्यालय से अध्यापक कैलाश भारती ने पूज्यप्रवर का स्कूल प्रांगण में पधारने पर आभार व्यक्त किया। व्यवस्था समिति द्वारा स्कूल अध्यापकों का सम्मान किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**